प्रकाशक
राजेन्द्र गाडण
हरमाड़ा, जयपुर

मोल
पंदरा रुपिया

GITAN RO JHOOMKO
by Badridan Gadan

Publisher : Rajendra Gadan
Harmada, (Jaipur)

Price : 15/-

Printed by : Ajanta Printers,
Ghee walon ka Rasta, Jaipur

अढाई आखर

ओ "गीतां रो झूमको" ले नै आपरी सेवा में हाजर होतां मन रै मांय घणी सकुचावण है। कीं तो अज्ञान अर कीं आत्म विद्रोह दोवां रा असर हूँ जको लिखियो जको मन नै नीं भावियो इण कारण हूँ सन् 1945–50 रा दिनां लिखणैं री जकी ललक मन रै मांय हुती जकी तकरीबन समापत ही हुगी। पछै परिस्थितियाँ रो इसो चक्कर मंडियो क लिखण-पढण रो परसंग ही छूटग्यो। घर पिरवार री चिन्तावां नै मुकदमा वाजी रा चक्कर में इसा उळझिया क इण दिस जोहण रो भी वास्तों नीं रियो। आं पैंतीस, चाळीस बरसां रो अन्तराळ, जींवण में सदा ही खटकसी। बीच-बीच में एक दो बार रावतजी सूं मिलणूं वियो तो उणां सदा ही लिखणैं री प्रेरणा दीधी पण कोई असर नीं वियो।

सन् 1985 रै अन्त में पत्नी रै निधन पछै मन में जकी घुटण रई उण रा असर हूँ दो चार गीत लिखिया पण फेरूँ क्रम भंग हूग्यो। नवम्बर 1986 में श्री सोभाग सिंहजी शेखावत रा एक कार्ड मिळियो जिकण में "जागती जोत" रै वास्तै उणां कोई रचना भेजण रो आग्रह कीधो हो। अठी बठीं नै कई कापियां नै पुराणां पाना ढूंढिया पण कोई रचना भेजण जोग नीं मिळी। अन्त रै दाय एक छोटी सी कविता "उळझिया तार" भेजनै सन्तोष लीधो। तठा पछै सोभाग जी सूं 2–4 बार मिलणूं वियो तो उणां राजस्थानी रै मांय कविता। काणियां लिखण रो घणूं आग्रह कीधो। हूं अरज करी क मनैं तो म्हारी लिखियोड़ी कोई चीज पसन्द नीं आवै। उणां म्हारो उतसाह बधावण तांणी म्हारी पुराणी रचनावां सुणी अर घणी आछी बताई। इण वात सूं मन रै मांय सन्तोस वियो अर और क्यूं लिखण रो मतो कीधो। कीं दिनां पछै ही रावतजी सूं मिलणों वियो तो उणां भी घणीं प्रेरणा दीधी अर रचना रो

क्रम चालू करण तांणो ताकीद कीधी। इण दोन्यूं ही विद्वाना री दिलासा पाण लिखणों भळे चालू करियो सो 3–4 मीना रा अन्तराळ में जकी टूटी फूटी रचनावां बण पड़ी वै सगळीं आपरी सेवा में इण "गीतां रां झूमका" में भेळी कर निजर कीधी। इण संग्रह रै मांय हूँ अगर एक भी रचना सहृदय पाठकां नै पसन्द आवै तो म्हारा धिन्न भाग।

रचनावां रा गुण-दोस तो विद्वान लोग ही पिछाण सी पण जको मोटो दोस इण रचनावां मांय सूं किणी किणी जागां दीसै वो छन्द-भंग रो है। छन्द प्रवन्ध रा ज्ञान सूं बिल्कुल अछूतो होण सूं छन्द रा निरवाह में कई जागां व्यतिक्रम आयो है उण रै तांणी पाठकां नै विद्वान लोगां हूं घणै मान खमा याचना है। दोस तो दोस ही है उण नै गुण बतावण रो तर्क कोई ठाई बात कोनी।

अन्त में श्री रावतजी नै उणां री अनमोल सहायता अर मारगदरसण रै वास्तै घणूं घणूं धिन्नवाद है। इण पुस्तक रै प्रकासण में जिको परिश्रम प्रूफ देखण आद में वै की नों उण वास्तै हार्दिक आभार।

बद्रीदान

अमुक्रमणिका

दूहा

सुमर प्रथम मा सारदा
गीतां गुच्छ गुणेह
सागर में हिक बूंद सम,
प्रयतन सूझ पुणेह

मानसरोवर मोकळा
मोती हंस मराळ
भेळा आखर भाळिजे
काक चंच कंकाळ

माता री मरजाद

मैं अबोध बाळक महतारी प्यारी मा तूं सिसु प्रतिपाळ
बस थारी माया बलिहारी जिण विन जीवारी जंजाळ
मूरख सुत तो सूं मुख मोड़ै खिण भर तूं छोड़ै न खयाळ
भेद न पूत कपूतां भाखै राखै निस बासर रखवाळ
चित में हूं नितकी न चितारूं धारूं नंह विधसूं कुछ ध्यान
सांचो करम कदे बित सारूं नंहकारूं इसड़ो अज्ञान
तो भी भीड़ पड्यां जगतम्बा अम्बा तनै करूं जद याद
गजरी वेरं हरी ज्यूं भागै माता नंह त्यागै मरजाद

समर्पण

दूहा

शेखावत सोभाग सी, रावत सारसवत्त
लेखण भळे संभाळियों दुहुवां जोश प्रदत्त
जिणरै प्रेर जगावियां जाग्यो आतम जोख
आंक किया जे एकठा तिकां समरपण तोख

एकलो

आज दीसै आसमान उणमणो
चांद भी उदास ही उदास
रात वीराणी वणी चुपचाप
तारा खिन्न मन विगत प्रकास

चित चकोरां रा उदासा चांद चीतै
पळ पहर सा होय डीगा डगमगै
रात वाळो गात वणियो द्रोपदी रो चीर
पोयणां पंखां खुलै नंह लोयणां पलकां लगै

चांद फीको चांदणी फीकी वणी
एकलो आकास हिरण्यां एकली
एकली वैठी विजोगण पंथ हेरै
एकलो हिवड़ो सुध्यां भी एकली

एकली सारस नदी तट एकलो
टुहकती डोलै टिटहरी एकली
कोचरी कुरळा रही क्यूं एकली
प्राण में वधगी विथा भी एकली

भरमियो संसार भ्रम हूं एकलो
भावनावां भी हिये भर एकली
एकली उर में वसी आराधना
साधना भी आज सारी एकलो

आज प्याला एकला है
अर सुराही एकली
पीण वाळा एकला है
अर कलाळी एकली

कूण पीवै कुण पियावै
पीछ वधगी एकली
पी सकै पण पी न पावै
आज मनसा एकली

एकलो पथ है बटाऊ एकलो
एकली मंजिल समूं भी एकलो
एकली यादां कसक है एकली
एकली पहचाण दुख भी एकलो

एकलो आयो धरा पर बांध मूंठी
जावणूं कर खोलियां है एकलो
जीवणूं है उमर जतरै एकलो
और मरणूं एक दिन है एकलो

नींद नैं बुलावो

आ ! गरीब री मीठी मुकती
नर अमीर धण त्रिखा–विणास
आ ! रोगी घायल री राहत
हिवड़ै में भर नवल हुलास

मद वरसाती आ मदमाती
दरसाती परियां रो देस
झण—झण—झण पायळ झणकाती
पग ठणकाती कर परवेस

लोयण–कंवळ भंवर–जग वन्दी
नाच पलक–आंगण निरभीक
जतरै सुपन नया उर जागै
लागै नहीं अरुण री लीक

राणी आव करूं अगवाणी
इण प्राणी री कर प्रतिपाळ
दुसट दुनी रा स्वारथ सुर हूं
टूटी उर–वीणा नैं टाळ

मजदूरी रो मोल

पोस मास रजनी रो मोको
घोर अमा वादळ री गाज
झिरमिर मेघ झड़ी चुप छायी
ऊठै रुक जम्बुक-आवाज

सण-सण पवन सीत सर मारै
कुण जागै सोवै सह कोय
थर-थर गात हाड कंप हालै
हीमत घर छोडण नंह होय

महलां मांय रिजकपत मोटा
गलम गलीचां माथै पोढ
विजळी रा हीटर सिलगायां
ऊपर लीध रजायां ओढ

इण मोसम किण कस्ट उठा कर
देखी गत थारी मजदूर
सुतसंजुत थारी घर हाळी
पड़ी ओढियां फाटा पूर

टपकै जर-जर छान पवन घुस
आवै छेकां हूं भरपूर
करड़ी किस्त कमावै करसा
दिल रा टुकड़ां हूं रह दूर

आखी रात खेत रखवाळै
पेमंद ओढ डोळियां डोल
मालिक दीधां भी इण मंहगी
मिलै न मजदूरी रो मोल

उद्बोधन

जाग उणींदा दुनियां जागी, क्यूं हतभागी ऊंघ रह्यो रै ?
ऊगूणी छायी अरुणाई, जीवण–जोत जगत में आई
मलयानिळ लीधी अंगड़ाई, पंछीगण कळ कूज मचाई
रवि कर हूं छिति गात छुयो रै

भारत तणं भाल चमचमियो, उडगण झड्या निसापत नमियो
खूट्या कंवळ भंवर उड भाग्या, नव सौरभ संचय में लाग्या
भव चेत्यो अब भोर भयो रै

वै थारा वडकां री वातां, गौरव तणी ऊजळी गाथां
खूब सुणी समझेड़ी ख्यातां, भूल्यो आज कियां जुग जातां
गुण थारो सब कठै गयो रै

वैरीड़ा ऊभा खग वांध्यां, सर थारै ऊपर निज साध्यां
मदछकिया सूतो किण माथै, उरड़ी विपत सबळ दळ साथै
(तूं) भोगीड़ा सुख भोग रह्यो रै

आळस में कींकर ऊंघाणै, ओजूं भी परवाह न आणै
जग थारो आपाण न जाणै, तूं किन हैवर तुरत पलाणै
रणभेरी रो नाद हुयो रै

हिंदूपण पाड़ै छै हेला, बीत गई सोवणरी वेला
अब तो ऊठ चेत अलबेला, दुसमण फेर वार नंह देला
पसवाड़ा क्यूं फेर रह्यो रै

ऊठ-ऊठ औसर री आसा, आळस रा अब छोड़ उवासा
सट दे पलट भाग रा पासा, पड़सी नतर जीव रा सांसा
सोवण में नंह सार रह्यो रै

नेह-बोपारो

अाली जकी घड़ी मतवाळी
टाळी निजर टळै नंह टाळी
नेह तणी अा रीत निराळी
पाळी प्रीत पळै नंह पाळी

तन-मन री सुध रहै न तावै
चकवै ज्यूं अंगारा चावै
नैण मिलै माडाणी नैणां
प्रीत तणा पासा इम पैणा

अणचीत्या सपनै नंह आया
चित भी सांप्रत कद न चिताया
पळ माहीं विजळी रै पळकै
रियो हियो परबस हुय रळकै

तावड़ साढ तणै तड़तड़तै
लूंवै घणै अाभ लड़थड़तै
मोटी छांट अोसरै मेहा
छळ-छळ नीर छिळै अणछेहा

कुळ मरजाद तणी सुध किण नैं
जागी प्रीत पिपासा जिण नैं
पी-पी करै पपीहो पेखै
स्वाती रो म्हूरत कद देखै

खोल्यां मुक्ख सीपड़ी खाती
सागर तीर प्रेम-रस राती
अमरित-झड़ लागै आकासां
मोती गरभ पड़ै मधुमासां

बेवस इसो नेह–वोपारो
वाधो–घाटो कीं न विचारो
पाथर धार हिये पग धारो
घलसी घणूं जीव रै घारो

साईनां परदेस सिधारै
हेरहेर पथ लोयण हारै
पाछै रहै घणा पिछतावा
आवा घण संदेस न आवा

नेह-पुजारी

कुण जाणै किण नैं कंह जाणां
नदी-नाव संजोग निभाणो
बणै जठा तक वात वणाणूं
ओठो हुवै न पाछै आणूं

एक कहै जाणूं उतराधै
दूजो कह दिखणाद दिखाणो
एक कहै पूरब दिस आळी
पिछम तणी दूजै सुध पाळी

नाव-पून रै वेग निहारो
कद पावैली पूंच किनारो
झट आंधी रा वस झकझोळा
हालै विचली धार हिलोळा

फाटै पाल चाल आ चूकै
झट मेघां चढ बीज झबूकै
आमर फाट पड़ै अणचूको
मूको बळ साहस नंह मूको

चाळा करै पवन उणचासां
सकां न कोई लेय उसासां
आखा जग ताखा सूं इधका
बाळै विख सासा बिध बिचका

देख्यां नाव दाव निरवाळा
हिवड़ै धीर धरै न हिंवाळा
पिण जाणै किण सूं पड़ पाळा
वेगा ढूकै कूल विचाळा

जिण दिस तरी वधै अणतारी
पूगै तिण दिस नेह–पुजारी
मिलै कूल सूं सुवस मिलावै
लखतां नाव किनारै लावै

मरजीवणा

लिखती-लिखती लेख, विधाता सोयगी
पोय सकी मोती नंह, कांटा पोयगी
हा ! पूनम री जगां, अमावस होयगी
खिलती कळियां खास, खुसी सब खोयगी

ऊगन्तो परभात, आंथवा आयग्यो
ससि डूबंतै साथ, सुरज सरमायग्यो
एकण पोथी पाठ, पढ्यो जिण प्रेम सूं
हुआ आज छत्तीस, कहो किण नेम सूं

जिका धरम जोधार, तेग निज ताणियां
हिन्द बचावण हेत, बणी गुरवाणियां
वै धरती रा लाल, आज किम ओखिया
पाकिसतान प्रतक्ख, तिकां नैं पोखिया

हितू जिका हिंदवाण, हुया रिप आज क्यूं
करिया सुत कुरबाण, गोविंद गुर गाज क्यूं
सदा रिया सनमुक्ख, धरम हित धारतां
संकै नंह क्यूं सिक्ख, मिनख नित मारतां

खींच्या खाका खूब, सजीली स्यान रा
सपना खालिस भर्‌या, सु खालिसतान रा
भिंडरांवाळै कहो, किसा सुख भाळिया
रोग सिखां रै मांय, फूट रा राळिया

हिंद हूं अळघा होय, कहो कंह जावणां
पोखैला दिन कैक, पड़ोसी पावणां
जे दोयण री सोख, मान मग हालिया
अपणं ही अविवेक, पिसण पख पाळिया

नसट हुवै भ्रम नेठ, जेठ विख जागणां
प्रगट पुराणां पाप, दिलां रा दागणां
दुरवळ होवै देस जकां कद जीवणां
जठै जुलम हित मरद, हुवै मरजीवणां

गुनहगार

म्हां खुद अपणी निगाह में गुनहगार हूइग्या
जद–जद विचार कीधो बेजार हूइग्या

पासा पलट-पलट नै चौसर बिछावणी
पिट-पिट नै चाल चूकां, गोटां गमावणी
हारे थके हियै री सुध कूंण लेण ढूका
कतरा अंधार काट्या विजळी तणां झबूका
खिण एक मांय खुद ही, भवभार हूइग्या

सोची हजार सोचां पण पार कद पड़ी
भावां भरी भलेरी वस्ती ही ऊजड़ी
जतरी विचार जाणी बतरी विचारली
बाजी हजार बातां, हीमत री हारली
सारो भरोसो टूट्यो, सरसार हूइग्या

वाळू री भींत बांधी कर–कर उपाय कोरा
कद सह सकी भलां वै, झंझा तणा झकोरा
आखी जहान मांही, जांरा हा बोलबाला
जां नै हीं रंग दे दे, पीता हा लोग प्याला
दम ही में देखतां सब बिसमार हूइग्या

पीड़ां फिजूल पाळी सांसां जिकां संभाळी
दावा-अनळ दुखां री पावां तळै प्रजाळी
किणरा कसूर काढां, किण सूं हिसाब कारां
भागां तणै भरोसे बिकिया खुलै बजारां
करणां करावंणां कीं बेकार हूइग्या

दीदार

निजर्‌यां निहाल व्हैगी दीदार देखतां
दरसण नुवां सा दीसै हरवार देखतां

जद-जद चितारवानै आंख्यां उठावणी
दूणी वहार दीसै सोभा सुहावणी
करदी अंवार कतरी सोची न सांभळी
उण पार अटकगी किण आलोच में अळी
ठिठकी ठगीजगी सी, इण पार पेखतां

निजर्‌यां..........

नीलाभ आसमानां जद-तद विथा जगाई
वेवस निगाह व्हकी ओठी ही लौट आई
लोयण दुखाय लीना जो-जो दिसा-दिसा नैं
नींदां खराव कोनी निरखो निसा-निसा नैं
वधती थकी विथा रो, विसतार देखतां

निजर्‌यां..........

सपनां घणा संजोया, मिलणै-मिलावणै रा
संगीत नित संवार्‌या, गीतां में गावणै रा
सोचां सिरावणी कीं सौ-सौ संताप सूं
मन क्यूं निरास हूग्यो, अपणै ही आप सूं
वरवाद हूंण वाळा आसार देखतां

निजर्‌यां..........

आखर समझ अणाई, अणजाण भावना
पैलां संचेड़ा पाछा पाया जे पावना
साजण समा रिया हा, सास'र उसास में
छाई ही आपरी छिब आस-पास में
सौ वर निसार व्हैगी, संसार देखतां
निजर्यां...........

करो दुखां रा मुंहडा काला

दिसा-दिसा फूली नव फूलां
कुसुमित भ्रमित सुगंध सुकूलां
इन्द्रधनख ओढा आकासां
मोहित भ्रमर फिरै मधुमासां

निरख प्रकत रा खेल निराळा
मन कोकिल कूकै मतवाळा
चितै चकोर चन्द दिस चावा
मोद हिये वधिया अणमावा

भरिया कता रंग मनभावण
चातक हिये कयां सकुचावण
स्वाति बुन्द नंह पीछ सिरावै
घण सावण में भो न अघावै

वैभव प्रकत तणा वीखरिया
नीर ताल सर घण नीखरिया
पोयण फूल सीस परकासै
भाग तड़ाग प्रगट सुख भासै

इसड़ै समैं दृष्टि-भ्रम देखो
कोऊ दुख कोउ हरख विसेखो
भागां जोग भोग भव-भव रा
आखै जग निज निज अनुभव रा

अमां सोधिया कता अंधेरा
फेर–फेर करमां रा फेरा
दीस्यो क्यूं न प्रकट दिणियायर
सूझ्यो खीर-भर्‌यो किन सायर

आतम कीं आळोच अळूझ्यो
वाद–वाद दुखड़ां कीं बूझ्यो
मधोचन्द खिलियो मन मांहीं
कुह्‌ देख चित कीं अटकाहीं

नीकी कदे न हुवै निरासा
पळ में तोळा पळ में मासा
माया–वस जीवां भरमाणां
ठाकुर राखो चित्त ठिकाणां

दुविधा मेट अंधारो दुलखो
सोधो पन्थ उजाळो सुलखो
जीव तणा काटो सह जाळा
करो दुखां रा मुंहडा काळा

गरीब री मणी

आप मिल्या त मिली नव निद्धी
सुलभ हुई सह आठूं सिद्धी
दाळद मिट्यो अमीणै दिल रो
मिलियो छोड़ कठिण मंजिल रो

बिहुं आंख्यां निज राख बिछाई
कतरा जुगां अडीक अणाई
पलकां जदिन आप पग धरिया
अवनी नन्दनवन ऊतरिया

सोना रा सूरज नीसरिया
भोर-किरण परकासां भरिया
कंज हिये नवला वीकसिया
चंचरीक मन दिवला चसिया

आखै तन फूली अमराई
वंसी मधुरी कूण वजाई
सुण–सुण सुध राधा विसराई
ऊठ खिची जमना तट आई

कान्ह नहीं दीस्यो वट कानी
छिप–छिप आई छानी–छानी
बस मुरळी दूजी दिन वाजी
पळट पड़ी भरियां नाराजी

छळियै नैं हूं खूब छकास्यूं
थोग–थोग पग उणां थकास्यूं
भोळै मनैं किसो भरमाई
आखी निस भटकन्त बिताई

रस नीरस हुयग्यो खिण हेटै
मिलण चाव मिटियो नंह मेटै
परतख ज्ञान प्रकट हुय पाछो
तोड़ै मोह छोह कर ताछो

ज्यो सपनो आंख्यां इम जोयो
सांसां मांय सदैव समोयो
खुलतां पाण आंख अणखाई
गिणतां मणी गरीब गमाई

सपनूं

सपनै स्याम दीसिया सजनी
रवि जाणै काटी भव–रजनी
हिये खुल्या पोयण हरखन्ता
मन रा मोर घणा महमन्ता

ओड़–छोड़ आणन्द न आयो
छिति माथै कुसमाकर छायो
रळियामणी कळ्यां सतरंगी
उडी तीतर्यां रंगविरंगी

इन्द्रधनख तणिया आकासां
समहीं नासां मांय सुवासां
छायी भंवरां रै मद-छोळां
कुसुमां बाग सुहाग किलोळां

मन्द सुगन्ध हुई मदमाती
सीत समीरण हिव हरखाती
उण रा पीत दुकूल उडाती
जीव अतीव उमंग जगाती

वंसी अधर धर्यां अणभंगी
तट जमनां रै खड़ो त्रभंगी
सोहण रूप काम सकुचावै
मोद हिये मम कींकर मावै

हूं बध नै निज हाथ बधावण
परसण काज तिका पद पावण
वस कीधी मन हूं बतळावण
वरस पड़ी आंख्यां वण सावण

निठगी नींद तूटग्यो सपनूं
वस में कियो कांपता बप नूँ
जळियो जीव घणी मन जाणी
ओरूं नींद असी कद आणी

अणतोल

मन रो किसो भरोसो मरदां
खिण-खिण बिजळी जियां खिवै
एक पलक मन घर रै मांहीं
दूजै समदर पार दिवै

पलक झपकतां पाछो आवै
लावै सौ-सौ सपन नुवां
भंवरै ज्यूं कळियां भरमावै
रंगरळियां रा राळ धुवां

खिण मांही ओखो हुय खिणकै
खिण में होवै सतर खड़ो
खिण में टूट जुड़ै खिण-खिण में
मुड़ै-तुड़ै सौ भांत मड़ो

जद-तद वस करवा री जाणां
उड़ै बधूळ अकासां एम
करां विचार ध्यान धरवा रो
कर पावां आंधी वस केम

विना जोर वुध वणै वापड़ी
समझै कदे न ओ सिरजोर
जतरो कर परबोध जणावां
ततरो कर राखै निज तोर

इण रो काम घणूं अणहूंतो
गिण–गिण हुवै अकल री गैल
जियां–तियां आ बोध जगावै
छळ कर ठगै इणी नैं छैल

गिणै न ओ कोई गुर ज्ञानी
मिणै न मूंघो–सूंघो मोल
लाखां देख लुळै नंह लम्पट
तुलै न ताखड़ियां अणतोल

नींद रो उडणूं

नींद नैणां री गई तो रात वैरण जात होगी
डूंगरा हूं घणी डीगी पळ-घड़ी जुगमाळ पोगी
सरकती दीसै नहीं सुइ घड़ी कींकर खड़ी व्हैगी
काळगत थमगी कियां कर वात छोटी वड़ी व्हैगी

भावनावां होय भूंडी सोच रै सागर समाणी
ऊठवा लागी अळोचां तूटवा विसवास ताणी
मन घवरियो मोकळो खोल्या पुराणा खातणा
पळटिया पाना पढ्योड़ा घोर छाती घातणा

हूं जलमियो जिण घड़ी में और जाणै कुण जास्यो
अथिर मन रहियो अणूंतो थिर कदे रहियो न थाम्यो
अजनवी वणियूं अजोगो सदामद अपणूं सहज
भाग रै रहियो भरोसै मान कीधोड़ो महज

जोड़ पायो नंह जुगत सूं कोड़ दुक्खां काटणा
हेत निरवाळा हरी सूं खास आणंद खाटणा
पीड़ भूठी पाळवी हिव न्हाळवी निजर्यां नथी
धूड़ राळी आप धोळां कूड़ वातां ही कथी

जिकण रो हिक नाम जपियां कोड़ पापां कट्टवै
ज्यूं गणिक्का गज अजामिल रोर सगळा रट्टवै
नेह लारै नोसर्योड़ो एक नांव अलक्ख रो
पाप ढेर प्रजाळसी पण पाळसी निज पक्ख रो

धारियां मन री धरा में धणी री हित-धारणा
कारणां सुभ काम केता मन तणा बिख मारणा
भाग कूड़ा ऐण भांती राग रूड़ा रोळणा
लाग घण अनुराग लारै बाग जै-जै बोलणा
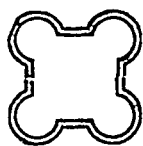
अनोखो गीत

कोई अनोखो गीत गाऊं
दरद दिल वाळो सुणाऊं

दूर मुरळी रै सुरीलै साज ज्यूं
कोकिला री आंव तरु आवाज ज्यूं
सुण सुयम ही रीझ जाऊं

रसिक रसभीनो रसीलो
सरस सुर मीठो सजीलो
भंवर कळियां ज्यूं भ्रमाऊं

हर पलक में हर घड़ी में
हर अखर में हर कड़ी में
मोतियां री लड़ लुटाऊं

पीव तो परदेस वसिया
पास प्राणां रै परसिया
भूलियां कींकर भुलाऊं

उभै पख दीसै अंधेरा
उभै पख छाया उजाळा
जोत आसा री जगाऊं

धिन घड़ी धिन भाग म्हारा
वीतिया कतरा जमारा
पास साईंना बुलाऊं

निरखिया सपना निराळा
तूटिया सह बन्द ताळा
खोल आंख्यां देख पाऊं
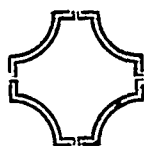
नीड़

ठंड गरमी सूं वचण नैं मेह पाणी रो रुखाळो
चूंच में चुग–चुग तिणकला नीड़ हिक रचियो निराळो
और वचियां नैं वचावण वासतै आंवियां में सिर छिपावण वासतै
दूर गीधां, वाज सिकरां री निजर सूं राखवा नैं और रहवा वेफिकर सूं
काटवा सारा दुखां रो एक काळो

वैठ ऊंची डाळ चिड़की चहचहाती
गरव सूं कर सीस ऊंचो गाण गाती
पेड़ री फुणगी मथै चढ़ चांच खोल्यां
नर चिड़कलै फूलती अलमस्त छाती
कद सधी संसार नं खुसियां किणी री
आयगो मिनकी–निजर में आज आळो

वा चढ़ी चुपचाप तरु पर क्रूर निजर्यां गाडियां उण नीड़ कानी
चकचकाई ही चिड़कली मोकळी नर चिड़ै री भी मरी वस आज नानी
भूंगड़ै ज्यूं भाड़ नैं फोड़ण भळे कर न पाया वै मिनी रो मुक्ख काळो

गटकगी सारा गदेळा आंख भपतां हेक पळ में
नीड़ रा तिण वीखर्‌या एकेक पड़कर भूमि-तळ में
विलखती चिड़की विचारी दूर हूं देखण लगी आ नास-लीला
चिड़कलै नीसास न्हाखी लख लुटंता आज वै सपना सजीला
क्यूं समय वीत्यां पछै पर फड़-फड़ा कर
गिट लियो विख सूकियो जळ नैण वाळो

वीसर्‌या सव दुख विगत रा तुरत उडिया नई रचना करण ताणी
पांखड़ां पुरसार्थ भाल्यां पिल पड़्या वै विहूं प्राणी
भळै नवला भोर ऊग्या भळै सिंझ्या भी सुहाणी
छेम जीवण छाकियो ओ नेम कुदरत रो निराळो

दो दिन

दो दिन वहार–सूना दो दिन वहार का
दो दिन चढ़ाव का है दो दिन उतार का

लंवी उमर लखीजै दो च्यार दीह री
सजनां ! चढ़्यां सरैलो सूळी मसीह री
दुनियां वणी दिवाणी स्वारथ संवारवा
तय्यार खाग ताण्यां मासूम मारवा
दो दिन उजास का है दो दिन अंधार का

पळ–खिण गुजारा पावां जुग आप वीत जासी
आखिर अन्याव उठसी जग न्याव जीत जासी
वीत्यां विभावरी रै परभात हूंण पावै
अवनी पै अंसुमाळी किरण्यां रो जाळ छावै
रजनीस रूप रंका सिङ्या संवार का

मरजाद मेटवानैं उडगण उतावळा सा
टिमटिम अ कास टमकैं वेताव वावळा सा
महमा जहान मांही सूरज नै चांद वाळी
दिन–रात रूप देख्यां दसहूं दिसा उजाळी
दो दिन निखार का है दो दिन गुवार का

माटी घणीं अमोलक धरणी हिये धरीज
अन–धन अमोघ उपजै कृत काज जग करीजै

माटी री कूख मांहीं हीरा हजार निपजै
माटी में नीपजेड़ा माटी ही में समपजै
दो दिन है मृत्तका का दो दिन कुम्हार का

जीणा जतै जगत में सीणा जरूर है
हीणा सरीर मन में गहरा गरूर है
जालिम इसा जमाना कैड़ा विणासकारी
वैड़ा हिसाव वधका कुदरत रा लाभकारी
दो दिन है चोर का (तो) दो साहूकार का

कळियां विकास कीधां फूलां सुगंध फावै
मधुकर गुंजार माता तन कीध अब्ज तावै
मधु लोभ लाग मांखी लपटंत पींड लारै
जिहिं व्याध तोड़ जावै मनहूं न डंक मारै
दो दिन है लोभ का (तो) दो दिन विचार का

उळभिया तार
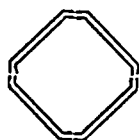
मन रा उळभ्या तार
कींकर सुळभै सुळभाऊं सौ वार

ज्यूं–ज्यूं खींचूं त्यूं–त्यूं उळभै
गांठां पड़ै हजार
काचो सूत खींचतां मो कर
कांप उठै हरबार

घबरायां दूणा घुळ जावै
आंटी खाय अपार
धीरज धरियां कारज सरसी
मरसी हीमत हार

होळै होळै हर गुत्थी रो
नाको ढूंढ निसार
हळकै हाथ ताण खुद ताणो
पड़सी तद ही पार

एकर ध्यान सुजाण तणूं धर
वीसर सब संसार
लंगर खोल छोड़ किसती नैं
कर में लै पतवार

लहरां सूं घबरावण लागां
पूगैलो किम पार
जो गज-मोख करी खण भीतर
उण रो राख अधार

केवळ ध्यान राख कर कानी
बस कर और विचार
सुळझै ज्यूं सुळझातो जा तूँ
टूटै नंह कोई तार

संकळप

आज पंछी उड़ चल्यो आसमान मापण
कै गगण रो थाह लेवण कै करण जीवण समापण

आपणीं सगळी कम्यां पहचाणतो हो
विघन बाधा पन्थ री सह जाणतो हो
पण लगन रो घणूं पाको
भिभकणूं तज बीज को सो कर भमाको
नीड़ रो तज मोह निधड़क
हालियो आकास मग में
नापवा ब्रह्मांड बलि री दोय डग में
और थापित मानतावां नैं उथापण

धुकधुकाया बाज सिकरां रा कळेजा
वधिक व्याधां रा भ्रमित हा आज भेजा
देख पंछी रो दुसाहस ग्रीध आकुळ
वहोत मन में अनळपंखी हुआ व्याकुळ
जो जुगां पर्यन्त नभ में ही विचरता
थःह नभ री लेण रो कद ध्यान करता
आज अदना ई पखेरू रो उडण लख
है हिंवाळा रो हियो भी लग्यो तापण

खळकियो घण नीर खोळां
रळकियो नदियाँ हिलोळां

सीत रो परकोप सांचो
हिम-रगां में खून खांचो
पवन उनचासां प्रभंजण
गाजिया चढ़ व्योम गंजण
इण ऊंचाई रो कठै अन्दाज उण नैं
थाकियो तन काळजो लगियो ज कांपण

पांखडा सूना पड्या पण
विहग करियो वज्र रो मन
चीरतो रहियां हवा रो वेग चौकस
ऊठतो ही ऊठतो रहियो उपर वस
कद थक्या पर कद उडण रो वेग थमियो
कद धरा कानी खिच्यो वो कद वरफ ज्यूं रगत जमियूं
संकळप फौलाद सरसो डगमगायो कद डगर सो
मर हुवो पंखी अमर सो एक नवलो मान थापण
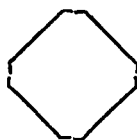
मोटी भूल

एक मोटी भूल कीधी नैण नैणां सूं मिलाया

क्यूं अचाणक झांकतां ई
निजर सूं बिंधग्यो हियो
क्यूं पुराणी सी पिछाणी
जाण में बहग्यो जियो
हार बैठा एक पळ में पार मनवाळा न पाया

पाळिया सपना सुनैरा
ज्यो जुगाँ ताणी हिया में
जोत प्राजळती रही ज्यो
जगमगाती सी जिया में
न्हाळतां खिण मांय मोती झलमलाया

भूलग्या गुंजार भंवरा
कैद कर लीना कंवळ
लड़खड़ाया एक वारी
फेर नंह पाया संभळ
किण दिसा जाणो हुतो पण
किण दिसा में निकळ आया

पाळ बैठा पीछ ऐड़ी
ज्यो कदे बुझणूं न जाणै

पीड़ उर री दूसरा पाखी
कहो कींकर पिछाणै
लाय ऐड़ी जिकण जोहण
जगत सौ दीपक जगाया

मैलो आकास

आज क्यूं आकास मैलो सो लखावै

दूर मंडती खितिज माथै वादळो सो चढ्यो आवै
उमस वधती सी अणूंती विरछ चुप-चुप घरबरावै
डूंगरां माथै उदासी सांझ रै लारै सरकगी
समै री गत सून होय'र ठोड़ ही जाणै ठरकगी
है कंई होणी–अहोणी काळजो यूं कंपकंपावै

चील ऊंची चढ़ गगन में चक्र च्यारूं मेर काटै
ढोर सगळा हड़बड़ाय'र डाटियां हूं भी न डाटै
फड़फड़ावै पर पखेरू नीड़ अपणा लेय नीड़ा
वाट रा वगता वटाऊ सरपट्या घर ले सवीड़ा
वीजळ्यां ऊंची खिवै अर भाळ सामीं वधी आवै

कोप कर आयो प्रभंजण गरव ग्रीखम रितू गंजण
झूम तर डाळां झकोळां भूरि आंवा फळां भंजण
छान उड़ झूंपा उघाड़ा दुख गरीबां कीध दूणा
भरभरायर' भींत पड़गी टापरां रै किसा टूणा
कूर कुदरत भी कहीजै दूखतां नैं ही दुखावै

आंखियां भर रेत आखी वांफण्यां भ्रू केस भूरा
रेत-कण उड राख दीना आज सब कारज अधूरा
मोह माया मिनख रै मन भीड़ भावां री भरी
त्यूं प्रवळ आंधी अंधेरी अवनि तळ पर उतरी
धोर तज खुद डगमगै अर दूसरां नैं भी डगावै

जादू

काळी अणियाळी आंखड़ियां
जाणै कांई जादू राळ गई
कोई दरद आनोखो दे दीनूं
कामण मन माथै अै कीनूं
रातां री नींद हराम करी
सुध–बुध सारी जाणै विसरी
मोहित मृग कींकर भाग सकै पग में डगवेड़ी डाळ गई

मन भूल गयो सगळी मजलां
पड़गी तन पर पड़छांई सी
आंख्यां रै मांय वसी अब तो
उण आंख्यां वाळी झांई सी
जतरा उर में सपना जगता उण सैं नैं सुयम संभाळ गई

आ समझ न आई आज तलक
कैड़ी इचरज री वात वणी
कीं कसक कळेजै कढ़ न सकी
अड़गी छै जाणै सेल अणी
पुळकां मन्तर सूं पाळ गई अन्तर में सुधा उछाळ गई

गीत ही रूसग्या

कुण तो सुणैलो पछै किण नैं सुणावां
गीत ही रूसग्या अब कांई गावां

जिण नैं निरखतां ईं हिवड़ो हरसतो
नेह–सुधा वाळो मेह सो बरसतो
वै परदेसीड़ा तो करग्या पयाणा
अब न हुवैला बांरा वापिस आणा
झूर–झूर भावैं नैण तो गमावां

ज्यो निरमोही मोह न जाणै
पीड़ पराई कोई ना पिछाणै
उणां तो भुलाय दिया जाण नै पराया
म्हां जो भुलाया तो घणा याद आया
यादां रा अब कांई माळिया खिणावां

वै उणियारा भळे निजर्यां न आणा
नींद भी न लावै कोई सपना सुहाणा
किण नैं अडीकै भोळा मन विसवासी
वीत गया जका दिन पाछा कद आसी
आसावां रा कांई कोरा गाडूला भरावां

सांझ नै सवेरै वाळो मेळ कद होवै
वायरै रै वेग कयां दिवलो संजोवै
वीज रै झबूकै कोई मोती केम पोवै
सांस रै सिराणै काळ सांपलो सो सोवै
सांस–सांस वाळो लेखो कियां सी लगावां

विरछां री लड़ाई

आज विरछां री लड़ाई वाव सूं
राड़ मांडी हिरणियां वणराव सूं

काळजै कमजोरियां दूरी करी
होड रोपी हीमतां मन में भरी
पग धरा पर रोप ज्यूं अंगद पगां
मर मिटण री साध है इण मारगां
भै तज्या निरभै हुआ भर्‌या हिवड़ा वीरता रा भाव सूं

कोप कर आवै भलां किन आंधियां
सोर करती दस दिसां दळ वांधियां
वाळद्यो लुळ वायरै रा वेग नैं
काट राळों नमन कर इण क्रोध रा आवेग न
सीस ऊंचा कर भळे दोयणां वाळो निजी दरसाव सूं

है प्रसन हसती तणूं जद कीं समझणूं बूझणूं कीं
जीव ही जाणूं निहच्चै जीव हित फिर जूझणूं कीं
तूटणूं अभिमान ताणी छो भर्‌यां हिव चाव सूं

तर अबीढ़ा होय तणग्या सिंधु सोखण अगथ वणग्या
वायरां रै घाल बाथां गाण लाग्या वीर गाथा
आसमानां फाड़िया मुख भोत भूंडै भाव सूं

हिलोळां हूं जड़ां हालै जिकण री धूज धरती टाळ करदे टिकण री
पण निभावण री अठै पण आपड़ी पड़ गई चावै अधर पर पापड़ी
मन सजड़ मरदानगी घलिया बदन घण घाव सूं

अडिग छै सो अडिग रहणा डिग गया सो डिग गया
झड़पड़्या सो झड़पड़्या अब ओर तर उगसी नया
कूंपळां पळसी समीरण त्रविध बिध सरसाव सूं

ओप फुणग्यां सीस आई भोर किरण्यां भाळतां
प्रबळ बळ तूट्या पवन रा गरब सगळा गाळतां
वकसूरां सीस वाजै चोगणै ई चाव सूं

गैल रहणी छै गुमेजां काटवा सत्रां कळेजां
याद कर-कर सैण अंजसै भर्‌यां कीरत भीड़ भेजां
बाव सूनी ही वहो अब मोकली अणराव सूं

आरोह-अवरोह

आरोह

दीह सिकारां दौड़ता
सैण कलाळी सांझ
मदकळ करता मोकळी
माता जोवण मांझ

कर में प्याला कांपता
डग वोतल डक डक्क
आरोहां रहिया अली
छोहां-मोहां छक्क

लगथग महलां लागता
डगमग भरता डग्ग
जे अधराते जीमता
थयां नसै अणथग्ग

करती वात कलाळ री
नैण कियां नीचाह
लव अमरित सा लागता
सौरभ रा सींचाह

ज दिन कलाळी जोहतो
नेहां भरिया नैण
बीणा रै सुर बाजता
बहका–बहका बैण

सजण कलाळी सोहणी
फूल पियाला हथ्थ
करती मनवारां कह'र
गहर दियां गळवथ्थ

सोहण थाळ सजावती
अखन कलाळी अज्ज
चिरताळी करती चिरत
चाळागारी चज्ज

माडाणी मन मोहती
लाडाणी चित लग्ग
मद पाणी दे मोकळा
सजती आप सजग्ग

मदां पूर आंख्यां मिंडी
तातै रुधिर तरंग
आतुर मन अर आतमा
कूदै जेम कुरंग

दीहां री कथ दूसरी
पंकज वरण प्रभात
सोव्रण बरणी सांझ ही
रंगी–चंगी रात

जद ताणी मन जागता
सपन नया सरसार
हिये वींध जाता हरख
परख पंचसर पार

अवरोह

वै प्याला'र कलाळ वै
वै बोतल वै रात
नहीं नसा नंह नैण वै
वदळ गई सव वात

मद-प्याला नंह मांगणा
अवर विलाला अव्व
सदमतवाळा सीखग्या
स्याणप वाळा सव्व

लोयण देख्यां लागती
देती हिवड़ा दाग
जे चत्वर हुय जागती
अव न रही वा आग

ऊभा दीह उदासिया
रातां सव वदरंग
अवरोहां मद ऊतर्‌या
तन-मन कीधा तंग
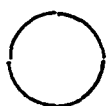
दोस-दरसण

जकै दीह नैणां पिछाणां जगाड़ी
लगी ताप बेमाप ताछां लगाड़ी
सुधी भूल वैठी वुधी वेहिसावां
कता खोजणां री खुलीजी कितावां

नथी पार लाधा रथी रास राळी
मथी बारि केहा ध्रती हाथ घाळी
सहारा अनेकां सुधी यूं संजोया
सळी भी न ऊगी व्रथा बीज बोया

जता खोज काढ्या बता रोज वाढ्या
दुखी आंख दूणी पड़ी आस पूणी
विवेकां विसार्‌या घणा बिस्सवासां
नकां सांस रूंधी नखीजै निसासां

सखी भाव साध्या उरां में अराध्या
वण्या वावळा जे वडा रोग वाध्या
जको आप जाणी सको मैं सुणाणी
लहो कीं न लाभो हुई भोत हाणी

हमें हूण लागा रुसाणां मनाणां
वळे काळजां रा जळाणां वुझाणां
घणा सोर मोरां चकोरां मचाया
न चन्दां चितारी न मेघां मनाया

अडीकां घणी रात दीहां अणीजी
भणक भी न सन्देस वाळी भणीजी
छळी वेस कासूं छिपीजै छिपायो
धपीजै न भूखो सु वातां धपायो

मिणे केतला ओळमां यूं मिणीजै
गिणे भूल चूकां एक दूजां गिणीजै
वदूं वाद कोरी कथावां कहेणा
(थां) अमां दोस दीजै (म्हां) तमां दोस देणा
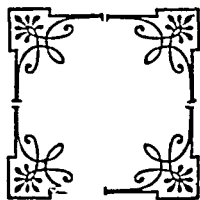
हवेली रै प्रति

सुभग हवेली सांतरी, वणी नगर रै वीच
ऐरावत जाणै अड्यो, मदछक आंख्यां मींच

हेली मंह मंगळ हुवै, रुड़ै अनोखा राग
आह गरीवां री उडै, लोह कपाटां लाग

ऊंची भली अटारिका, सांचै ढळी सुरंग
तैं वसतां कह तो किता, भया झूंपडा भंग

वातायण वाल्हा वण्या, ऊंचै महल अतीव
कैक गरीवां रो रुधिर, निगळ्यो थारी नींव

री हेली सन्तोख रो, निहचै कीधो नास
केता नर जीवण किया, अरपित थारी आस

ईंट–ईंट कर एकठी, भींतां चुण भारीह
खून पसीनै हूं करी, थिर हसती थारीह

सीत–घाम सहवी सदा, वै मजदूर विसेस
आज हवेली आंगणै, पा नंह सकै प्रवेस

अये हवेली ऊजळी (तूं) सह वातां समराथ
कै झूंपां रा खून हूं, रंगिया थारा हाथ

पवन झरोखा पेखियां, सालै उर में सूळ
टणकी तैं के टापरा, निपट किया निरमूळ

पांवां रै नित पालटै (तूं) जाझा धन जंजाळ
रिच्छा हित थारी रुळै, केता नर कंकाळ

तैं हेली ऊंची हुतां, दबिया झूंपा दीन
अमित कराहां ऊठवी, (थारै) उर करुणा उपजीन

पाट दिया घर पार रा, भरिया निज भंडार
री हेली तो में रहैं, (अै) सांचा साहूकार

साधारण तो में सतत, सुरग सरीसा सुक्ख
धणी तुहाळा अै धनिक, देखैं क्यूं पर दुक्ख

जोड़-जोड़ कीधो जमा, मूंजी धन वेमाप
अे हेली ! मत आंजसै, (ओ) पूंजी रो परताप

पूंजी आग प्रजाळियां, झूंपा महनत झोक
भव्य हवेली में भर्‌या, अै विद्युत आलोक

करड़ी महनत जे करै, कळकळती किरणांह
त्यांरा झूंपा छान हित, तरसै विन तिरणांह

सीत-घाम नेक न सहै, लहै कष्ट नंह लेस
विघना री मरजी वड़ी (वै) हेली वसै हमेस

सीतळ नित खावै सुखद, भवन विराज्या भाळ
धवल हवेली रा धणी, (अै) झूंपड़ियां रा काळ

निस दिन निपट निसंक व्है, भोगै त्रिभुवण भोग
रंगिया महलां में रहैं, रै ! ढूंढां रा रोग

तूं हेली ऊभी तठै, बसता झूंपा बीस
गाड़ दिया तैं गजबणी, सैं रा धर में सीस

सुन्दर बेस सजावियो, गजबण तैं निज गात
बिलखै झूंपा बापड़ा (थारै) रंग चढ़ै दिन-रात

'दरद'

दरदां तणी अनोखी दुनियां
पीड़ां कुसुम रहै भरपूर
कसकां री कळियां अकुळावै
भंवर निरासां गूंजै भूर

आंसू मेघ नयण आकासां
सावण झड़ लागै सरसार
लगण चातका घणां लागणां
मिलण चाव हंसां भर मार

छुलै काळजा भर अणछोहां
मोहां तणां नाचणा मोर
विजळी खिवै हिये विद्रोहां
तड़ित दिखावै जाझा तोर

अजकां वेल चढै अण चाही
मन विरछां रै चारूं मेर
विना पात फूलै अलवली
माथै झलै घेर घुमेर

ओळ्यूं दोळ्यूं घणां ओळमा
घातां करै हिया नै घेर
वेग अडीकां रा वध वध नै
ढकै विजोग उदास्यां ढेर

आवेगां री चढै आंधियां
हिये खितिज धूँधळको होय
मणि मुकता माळा मन मांही
पळक आस विजळी दे पोय

मधु सन्देस मिलण कज मधरा
वहण कियां जद सीत बयार
सर सर गात सहज सरसावै
परसावै नव नेह प्रसार

दरदां मोल हुवै दिन दूणां
जूणाँ अक्षत जिसड़ा जोय
दरद बिना दिल सूना देखो
काठा दरद रखो सह कोय

जे दरदां नहिं हिये जगाणां
त्यांरा कयां हुवै निसतार
दरदां तणां वणै दीवाणां
वांरा जुग जुग हुवै विचार

दरदां री मीरां दीवाणी
राधा हिये दरद धण रंग
रह भीना जे सदा प्रेम रस
ढावै तिका दरद इण ढंग

सूर हिये जे दरद संजोया
पदां मांहि दीधा सह पोय
गुण गुण भंवर गीत जे गाया
गोण्यां लिया हिये मंह गोय

किण नै

किण नै अरदास करां
मन में किम धीर धरां

आंख्यां तो दरसण री प्यासी
उर मांहीं घणी उदासी
पलकां सूं नींद पिराणी
उण री सुध जद जद आणी
वीती ज्यो कींकर विसरां
किणनै अरदास करां

सुधियां सौ वार सुझाई
अतरी न भली अकुळाई
आतुर मन एक न मानी
कर दो सुण आना कानीं
डग भरी सदा सूनी डगरां
किण नै अरदास करां

वै चटक चांदणीं रातां
वहकी सी वैरण वातां
मदभरी मधुर मनवारां
चितवण री सहज चितारां
चित हरयो इसा चितरां
किण नै अरदास करां

पीड़ां बधगी मन में पळती
छोडै नहिं जीवण नै छळती
पड़गी ज्यो मोह तणी पासी
जड़ता आ जीव गयां जासी
डर डर नै और कताक डरां
किण नै अरदास करां

जुग जुग हूं वात जकी जाणी
उर रै नजदीक नहीं आणी
पग पग पर मग री कठिणाई
यादां हर वार अणाई
किण किण री याद करां
किण नै अरदास करां

भरमीजी दिसां भरी भावां
आमर भर दीधा आसावां
कुण कांनां मंह वतळावण की
किण करी सूचणा आवण की
किण दूर करां किण पास करां
किण नै अरदास करां

मन मोहन मन हीं में मिळियो
छिपियो हो छाया में छळियो
निजरां पहचाण भरी निखरी
वणगी परकास किरण विखरी
उर मांय उजास भरां
किण नै अरदास करां

पीड़ री दवाई

पीड़ री दवाई पूछूं कोई तो वताओ रा
कूक म्हारै काळजै री, कान तो कराओ रा
आस री अटारी चढ़ी रात दिन अडीकती मैं
कांई जाणूं आंवणां हुवैला कदे आपरा
कोल जता कीधा अनमोल बोल आवणै रा
सावणै रा मास जका मीठोड़ै मिलाप रा
वीतिया कताक जुग रीतिया छै नैण रोय
ओस केरी वूंदां कोई पीछ तो वुझाओ रा

हेर हेर थाकी हमैं मारगियो निहारती मैं
वेर वेर चिमक पड़ी चरणां री चाप हूँ
ओझकी अनेक वार परस रो संजोग पाण
हाय ! मोह भंग हुवो सोक रै संताप हूं
मेर टूट जावे नहीं सजन सुमेर वाळी
एक वेर टेर मनैं फेर तो वुलाओ रा

रूप तो अनूप घणूं नैणां में समाय रियो
छाय रियो वैणां में विछोह रो विलाप सो
कै तो मोह लीना कोई कूवड़ी कुजात कठै
कै तो भूल वैठा मग आवणै रा आप सो
दूर सूं सुरीलो राग हिलोळा हिया में लागै
भाग जागै स्याम भळे वांसुरी वजाओ रा

दूर वाळी दौड़

सांईनां सिधारियां रा जाणै कैक जूण हुवा
सूंण ले ले पूछूं कोई आणै रा सनेस
वाट रा वटाऊ कोई बात भी न पूछै म्हारी
काग भी उडाऊं कता काटणां कळेस

भोर री खड़ी खड़ी चकोर केरी भांत चाहूं
चांद ज्यूं चितारूं थकै दूरियां नै चीर
जूनी सूनी नीजर्‌यां रा जीव तड़फड़ावै जिका
किना पंख फड़फड़ावै कोई पींजरे रो कीर

सुधी रो सिंगार म्हारै हीवड़े रो हार जिका
राज री सवी नैं राखी काळजै उकेर
पोय राखी पास में उसांस में पिरोय राखी
नैण मींच न्हालूं तिका सांझ नै सवेर

कोड़ भांत याद करूं रावळी हरेक बात
मोड़ मोड़ जोऊं मुख मूंछ री मरोड़
तोड़ तोड़ रालूं तार सूखतै विताण सारू
दूखतै हिये री देखो दूर वाली दौड़

करड़ाई

अब ऊमर बिलकुल ओछाई
कै दिन काज करां करड़ाई

उळझ्या रिया सदा आळस में
वृत्ति रही मन री नंह वस में
रजिया घणा विसै रा रस में
मोह लोभ खींच्या आपस में
अब ताणी हिय कीं न उपाई
गळ जाणी सारी गरवाई
कै दिन काज करां करड़ाई

गया न कदे पुण्य रै गेलै
रिया वहता अघ रै रेलै
मन नंह कियो अकल रा वस में
विख भरिया जाभा नस-नस में
वळग्यो अब सो क्यूं वीसरसी
नीसरसी सव नीसरड़ाई
कै दिन काज करां करड़ाई

जेज नहीं लागी दिन जातां
विसरी एक न वीती वातां
काल्हे ही विकसी कंज कळियां
रंग भंवरां कीधी रंगरळियां
ऊभी दीठ जवानी आई
बूढ़ापणै अंगूठ वताई
कै दिन काज करां करड़ाई

खिड़की खोल जोवतां खासा
दीसै ऊभा दीह उदासा
निजर्यां जे पाछी नीहारै
मनड़ो घणा मसोसा मारै
करै बिचार करां अब कांई,
सरै नहीं कोई सकळाई
कै दिन काज करां करड़ाई

नमन तणूं गुण कदे न जाण्यूं
बण्यो रियो मन लोभी बाण्यूं
करड़ा रिया बिना कज कोरा
हमै चूकग्या सगळा होरा
दिन बीतै ज्यूं-ज्यूं दुखदाई
अखतावण त्यूं-त्यूं अधकाई
कै दिन काज करां करड़ाई

नदी कन्दारै रूंख निहारो
जिण रो दीसै निखत जमारो
कुण जाणै कद नदी चढ्यावै
वारी कद तट काट बगावै
जड़ां जकी गहरी जमवायी
रपटै मूळ गिरै तरुराई
कै दिन काज करां करड़ाई

पीछ

पळगी पीछ हिये अणपाळी
टळै नहीं कोई बिध टाळो
अन्तस हमैं घणूं अकुळावै
इण रो कूण इलाज वतावै

जी में घणा खोजणां जागा
भावां रा अग-सावक भागा
इण दिस ज्यो पंथी आ पूगो
उण रो हाल बुरो हिज हूगो

पथ टेढो कांटा हूं पूरो
दिन थोड़ो'र पूगणूं दूरो
वात अठै कोई नंह बूझै
ज्यूं सुळझै ज्यूं और अळूझै

दूर तलक कोई नंह दीसै
घाव भर्‌या पग कींकर घीसै
चिमक पड्‌यो देख्यां चौराहो
जाण्यां बिना कहो कंह जाहो

कंठ सूकार अधर पण सूका
ढिग कण'रै जळ पीवण ढूका
जोवै आंख जठै अग जळ है
करण लगी आतम घण कळहै

पागल कीं आयो इण पासै
खोयो समै अकारण खासै
भाग तनैं कींकर भटकायो
समै कयां असमै सटकायो

आणूं हुतो किणी संग आतो
ज्यो मारग रो ग्यान जतातो
चूक गयां मग तनै चितातो
सीधो पंथ सुपंथ सुझातो

आगै रात घणी अंधियारी
हूं तो भी हीमत नंह हारी
हुवै भळे परभात निहच्चै
सोधूं पंथ कियां मन सच्चै

जतरै पीछ एम ही जगणी
ठगूं ठगाऊं कदे न ठगणी
वास जिका कीधो विसवासां
समा रिया ज्यो सास उसासां

तजणै रो अब नहीं तकाजो
साज विघन कतरा ही साजो
आगै वधणै री अभिलासा
पण पाळण री अमर पिपासा

पथ भटकूं पण हठ नंह पाळूं
भोर ह्वियां विध ढूंढ निकाळूं
जाणो तठै अवस ही जाणो
भ्रम वस जीव नहीं भरमाणो

पळगी जकी पीछ निरवाळी
राळ्यां सरै न जावै राळी
अणपीधां पीवण री आसा
पीधां प्राण रहै घण प्यासा

ज्यूं पीवूं त्यूं पीछ जगाणी
अब नंह कदे तिरपती आणी
जुग जुग जकी जागती आई
तिण कींकर आवै त्रिपताई

प्याला अधर परस जद पावै
ललच्या प्राण ललकता आवै
सुधा सुरा सब एक समाणी
पय पीवो पीवो भल पाणी

छकणै रो वस नांव छळाओ
वध-वध नै अब पीछ वधाओ
पड़सी अन्त घणू पछताणूं
पीछ मिट्यां ओ जीव पिराणूं

पीछ ज्ञान री पीछ ध्यान री
पीछ सुयम रै स्वाभिमान री
पीछ भगति री पीछ मुगति री
पीछ आतमा जोण जुगति री

इण पीछां जग कूण अघायो
धाप्यो कुण कुण अवर धपायो
इण री जग इसड़ी अधकाई
वध्या उही जे पीछ वधाई

अमरित प्राणाँ

हूं सांचरसूं जगत हेकलो
आचरसूं निजरै आधारां
डरसूं हिये न काळ रा डर सूं
भरसूं सकट सुजस रै भारां

रण जीवण रै खेत गह्यां खग
बढ़तो ही जासूं बिण बाधा
चढ़तो ही जासूं गिर सिखरां
अढ़तो जासूं समंद अगाधां

रहसूं हिये सिमरतो रब नै
लहसूं मन री अमर दिलासा
कहसूं नथी एक कथ कूड़ी
दहसूं दिल री घोर दुरासा

एडी ठोड़ अंगूठ न आणूं
नांव न जाणूं कदे निरासा
पहचाणूं करतव्व तणूं पख
आणूं अमिट हिये अभिलासा

अरबुद गिर ज्यूं लगूं अकासां
मरजादा सागर ज्यूं मानूं
ऊफणतो सरिता ज्यूं आखो
छिण-छिण मानस रहूं न छानूं

परम प्रकास किरण ज्यूं प्रकटूं
चीर-चीर उर अन्धकार रो
दिवूं विदार दुक्ख दावानळ
समंद सुक्ख भर-भर सुप्यार रो

दिन-दिन दीप सिखा सो दिपतो
नेह सहित सांचा अहनाणां
जळ जळ जोत दिवूं जगती नै
पळ-पळ पाळूं अमरित प्राणां

अनमोल मिनख

ज्यो जग में चल पड़ै हेकलो
पथ सूळां रहियो भरपूर
पग-पग माथै विघन पेखतां
जीव सूकियो जाय जरूर

पण मनमूवो कीधां पाछै
आगै ही वधणों छै इस्ट
पाछै मुड़'र पेखणो पातक
इण में भरियो घोर अनिस्ट

परवत हूं बीछटियो पाणी
सरिता रूप धरै सरसार
पाछो परवत पर न चढै पण
पाहण तट काटै अणपार

जिण दिस वढै चढै गुण तिण दिस
सुध-बुध तज'र करै संचार
विघन प्रपंच एक नंह बोथै
प्रवळ प्रभंजण तणो प्रसार

वीर पुरख ओसर नंह बूझै
जूझै सिर कटियां जूझार
कण-कण व्है रण में कट जावै
मिट जावै मानै नंह हार

ऊंचो घणूं होसलो उण रो
जिण रो वज्जर जिसो विचार
पळ-पळ भी नांखै नंह पाछी
पकड़ी ज्यो कर में पतवार

लहरां सूं घबरावण लागै
पावै समंद तणूं कद पार
जूझ सकै न जको जीवण में
धूज-धूज डूबै मझधार

खोवै जिका होसला खुद रा
रोवै जीवण में दिन-रात
सोवै जिका आळसी बेसुध
बणै कठा सूं वांरी बात

जागै आप जगावै जग नै
राखै निज मग सदा बुहार
डग भरतो मन में क्यूं डरपै
तम-हर कर राखै तय्यार

आवै लाख विपत सिर ऊपर
नावै सीस न हुवै निढाळ
गरवै नहीं हरी गुण गावै
पाखै रह उण रै दिगपाळ

मन कोरै कागद रै माफक
सदा राखवै सुच्छ सफेद
भेद-भाव रै मैल न भांडै
छांडै पाप पुण्य छिण छेद

निज रा अैव कथै हुय निरभै
पर रा गुण रो करै प्रकास
डरै सदा कुकरम रा डर सूं
एक प्रभू री राखै आस

औगण तजै'र गहै सदगुण नै
लोभ मोह सूं रहै निलेप
जीवण एक सफर ज्यूं जाणै
पड़ै न उणरै सुजस प्रखेप

जगमग हियो ज्ञान सूं जागै
डगमग सकै न मनसा डोल
पग-पग सदा धरम प्रतपाळक
अग-जग इसो मिनख अनमोल

चीतारो चावै जिस चीतै

भूलां सूं जीवण भरियोड़ो
कोय न भलो करम करियोड़ो
क्यां रो हमैं भरोसो कारां
माडाणी कींकर मन मारां

ज्यूं-ज्यूं समै वीततो जावै
त्यूं-त्यूं मोत सरकती आवै
आखर घड़ी अन्त री आसी
पड़सी गळै काळ री फांसी

पाछा फिर जोवां किण पासै
वेली कठै कूण बिसवासै
संगी साथी कोय न सूझै
अणसैंधो पथ हियो अमूझै

जोय-जोय पग धरां जचाता
वगां मगां निज जीव वचाता
कुण जाणै सुकरम कीधोड़ा
दान मिलै पहली दीधोड़ा

संचित करम हुवै कोइ सखरा
पाळै पाप घणा निज पख रा
नतर समै कुसमै कुछ नांहीं
माणस डूब मरै भव मांहीं

करम धरम री जोड़ कहीजै
राखै जिण विध राम रहीजै
जोर कियां पुतळी नंह जीतै
चीतारो चावै जिम चीतै

सावण तीज

तपती लू तावड़ तड़तड़तो
पड़तो तन हूंतां प्रस्वेद
तड़फड़तो मन चैन न आतुर
गड़तो नैण कियां गोमेद

घर-घर स्वान फिरै लखराता
चिड़ियां चांच खोल चुपचाप
पसू छांह रो फिरै पेखता
तावड़िये रो घोर संताप

तूटै झळां धोरियां माथै
उठै बाय वघूळ अमाप
आखा जग ताखा अकुळावै
पाखा गरदभ करै प्रळाप

अंडा चील धरै तर ऊपर
अवावील उड़वै आकास
ऊमस घणी पात नंह हालै
चालै नहीं पवन उनचास

भीखम रुत ग्रीखम री भारी
अंधियारी छावै आकास
धूड़ उडै'र दसूं दिस धावै
सो'रो जद आवै कुछ सास

आखर मास असाढ़ तणै उठ
ऊगूणी छावै घणघोर
पुळकै हियो जियो सरसावै
मोद भर्‌यो कूकै मन मोर

पावस रितू तणी अगवाणी
करै पपीहो पी-पी कूक
कोयल तणी कुहू में कांकर
चपळ सारिका काढै चूक

मोटी छांट औसरै मेहा
लेवै जोहड़ा भर्‌या हिलोळ
खोळा नळा भर्‌या खरळावै
करै चतुरदिस नीर किलोळ

तपियोड़ो धरती रो हीतळ
सीतळ होय करै सन्तोख
ऊठै सुगंध धरा सूं अधकी
पावै जद आभै रो पोख

खेत तणै मग़ हालै करसा
जोड्‌यां हळ बैलां री जोट
नवी फसल री आस लियां मन
धरियां सीस बीज री पोट

मैड़ी बैठ विरहणी न्हाळै
बरसाळै चिमकै घण बीज
आसी अस चढियो आलीजो
तद गळ जासी सावण तीज

लहरासी तन सघन लहरियो
लड़ हींडै री लेसी लूम
रेसम डोर हालसी मचकी
झड़सी आंबै डाळी झूम

सीळी पवन अंग ऊघड़सी
उडसी चीर सुरंगो आज
घण री घटा घणी नभ घुटसी
लुटसी जणां तड़ित री लाज

बसन्त रा दूहा

आंव मंजरी गंध हूं नासां देय निवाज
अवनी पर देखो अबै राज करै रितुराज

भणहणवा लाग्या भंवर चटक कळ्यां घण चाज
सुच्छ वारि सर,ताल सिर विकस उठ्या कम्बोज

फूली सिरस्यूं फागण्यां ओढ्या खेत अनेक
जोबण वेलां जागियो अलबेलां अविवेक

सोंधी गन्ध सिरीस री भरै नास भरपूर
कसुमायुध मारै कता सार-सार सर सूर

फूली चम्पा फूटरी ऊली कूंपळ आज
कुसुमायी मधुकामिनी सोनजुही कर साज

अनुरागी वणियां अळी कळी-कळी रै काज
गळी-गळी रस गूंजणां पळी पेम री पाज

कोयलड़ी जद कूकवै दिलड़ी अंजसै दूण
वीभळ होवै विरहणी कोह समझावै कूण

रंगीलै रितुराज री सोभा घणी सिवाय
किसन सुयम रो रूप कह गीता मांह गिणाय

अवर रुतां हूं आगळो बधको घणूं बसन्त
वेल तरां रंग वाहुड़ै, हुवै विरह रो अन्त

आमर दीसै ऊजला भोमी धान भरेह
वणै दिसावां वींदणी कोयल गाण करेह

वहक्यो डोलै वावळो, वागां मांय वसन्त
लुळ फागां रंग लेयवा, कंवरि बुलावै कन्त

सकुचाती मन वाव सद, मदमाती महमन्त
रास रमण ज्यूं राधिका चाली हिये चिन्तत

आळी मतवाळी अजे, सजे प्रकत्ती साज
पोयण खोल्यां पाधरी, लोयण लीधां लाज

आवीरां नभ में उड़ै गळियां रुड़ै गुलाल
जद वृन्दावन जोहिया राधा रा कच लाल

फूटी तीत्यां फूटरी साख-साख में साख
ज्यूं मिनखां मन जागणी लाख-लाख अभिलाख

प्याला सौरभ पीवतो भंवरावळी भमन्त
आजूणी मनवार अब कीं न अरोगो कन्त

केसरिया पोसाग कर वेसर नाक वणाव
पुलक तियां तन-वेलड्यां भरै मिलण रा भाव

होळी पूजण हेलियां माल्ही सुगण मनाय
मांडी फागण महफिलां दिलां मांय इण दाय

विरछां चढगी वेलड्यां सुमनां कर सिणगार
वैठा विरही वापड़ा मांठीड़ा मन मार

महकां री मन्दाकनी वहै उसासां वीच
पाप मनां पाखा प्रकट आखा देय उळीच

कूंपळियां नव वीकसी, फूलां कळियां फौज
सिसिर दळां कीधी सरां मन भर दीधी मौज

परबत री पुकार

धरती निज सिर धारिया, डूंगर अत डीगाह
तर अठार उपनै तठै गिर अरबुद गीगाह

अड़िया सिर आकास में पग गड़िया पाताळ
दीसै ऊभा दूर सूं दिस दिस रा-दिगपाळ

कतरा जुग अै काढ़िया कता वाढ़िया काळ
आंधी ओळा ओढिया भाळ्या घण भूचाळ

गोरव नित गरवीजणां सीस उठायां स्रब्ब
रंग वीरा-रस रीझणां कीरत तणा कुरब्ब

धोक, ककैड़ा धारणां रिमां मारणां रिन्द
कोट गढ़ां नव कारणां हिवै पारणां हिन्द

इण धार्‌या सिर आपणै घणा अबीडा गड्ड
कर पावा रिप सर कणां चावा आफळ चड्ड

ओसरतां गोळा अनड़ गिर्‌या नहीं गिरिन्द
गढ़ कंगूरा टूटगा उलटा फिर्‌या अरिन्द

चितिया इण चित्रोड़ रा वैभव दिन बंकाह
जीपण में रहती जिकां साहां मन संकाह

कीधा पदमणियां कता साका आं रै सीस
आं री सोभा आखवी गिरिजा अनै गिरीस

गिरां सिरां सोभागिणी हीमत तणी हिलोर
किलां सिरोमणि कत्थणी भणी स रणथम्भोर

कुदरत हूं हार्‌या कणा मार्‌या मन न मगेज
माणस हूं हार्‌या मगर त्यांरा अधका तेज

दुसह दुखां हूं दाभिया परबत करै पुकार
परकत दीन्हा ग्रभै पद मिनखां लीन्हा मार

गिरा तरां नित गंजणा भूरि भंजणा मार
रह स्वारथ रस रंजणा मिनखां जम ग्रवतार

स्वारथ हित जे सोखिया सागर जिसा सहज्ज
त्यूं परवत नित तोड़वै कमठाणां रै कज्ज

करै छेद कम्प्रैसरां भरै फेर बारूद
खड़ै बत्यां दे परखचा मिनख घणा मरदूद

पाड़-पाड़ मम पांसळ्यां बंगला हद्द वणाय
खनिज कता ग्रै खोड़ला खोद-खोद नित खाय

काढ़ी देखो ग्रै कती सड़कां सूधं सटक्क
माल मता सब माहरा गिण-गिण गया गटक्क

परकत मो पिंड पाळियो जको जाळियो जोध
साची वातां नंह सुणै गिणै न को गुण बोध

ग्राभा मो सिर ऊतरै वरसाळै वर दैण
तरसाळै धर तिरपतै सरसाळै हिय सैण

मो तन पाणी ऊतरै भरै सरित सर भूर
निपजै अन धन मोकळा किरत गणै नंह कूर

हरियाळी मो सिर हुवै पळै जीव ग्रणपार
मिनखां री मत मारगी सैं रा करै सिकार

पाय-पाय दुख पाळिया पर्यावरण प्रतक्ख
घावां कींकर घालियो मो तन आज मिनक्ख

कता सन्त मो कन्दरां तपता रिया तपेस
भेळा गोरख भरथरी दादू सा दरवेस

अमरित वाणी जे अखी रखी ज्ञान री रेख
जुगत विचारी जोग री दुनियांदारी देख

वोह उपदेसां बोधिया मिनखां जका मुनीस
उणां सोधिया आसरम सदा अमीणै सीस

पत अजादी पाळवी नख मो आय नचिन्त
राणै रो पण राखियो भीड़ पड्यां इण भन्त

राजै गिरवर राजणी माल्याळी म्रग माळ
लंकाळा विढ़ लागणा, फिरै भरन्ता फाळ

डाढ़ाळा कर डोफरां, एकल गिड़ अणभीक
पाळ्या हूं वनचर प्रतख निजर्‌यां राख नजीक

पण औ मानुख पापणां किया आपणां कज्ज
छळ-वळ मार्‌या जीव छक निसर्‌या घणा निलज्ज

आज दसा हुयगी असी नंह तर वनचर नोठ
वसनहीन रमणी वणी पड़ी नगन मो पीठ

घात्र घल्यो मो तन घणूं मन भी भो'त मलीन
गळियो हियो गिलाण सूं दुखी होयग्यो दीन

दया धरम मिनखां तज्या भज्या लाभ भरपूर
काढ्या परकत काळज्या दाळद हुवा न दूर

बिधरा बिधान

किसड़ा वसन्त कीधा पतझड़ कसी बणाई
कळियां री केळ देखो भंवरां री आसताई
वागां वहार देखो, फूलां जकी सजाई
आंवां अनार वाळी सोंधी सुगन्ध छाई

महकां री महफिलां में, मकरन्द मोज दीधी
कुहकां ज कोकिलां री, कुन्जां पिछांण कीधी
डहकां ज डेडरां री वरसात री वधाई
पी-पी पपीह वाळी स्वाती तणी सगाई

ऊमस असाढ़ वाळी सावण री सीतळाई
भादू झड़ी भलेरी क्वारी री करसणाई
कातिक री दीप वाती अंधार काटवा नै
मंगसर रो पूत मीनो पातक उपाटवा नै

पौ माघ पतझड़ां रा मीना सिसिर मंझारी
परकोप सीत पेख्यां हाडां प्रकम्प हारी
फागण नै चैत फूलां नव कूंपळा निहारी
अवनी रै सीस आई रितुराज री सवारी

वैसाख जेठ तपता सूरज रा तेज सांचा
वायू वघूळ वधता, खूनां रगां हूं खांचा
अग वाघ एक घाटै पीवे है साथ पाणी
धोरां रै सीस धाई अगजळ री महरवाणी

ताती लुवां रा थपका सोकण निसास सरसा
पर नार गात गडणी नर नीच री निजर सा
उद्दाम ताप अधका सन्ताप पाप साधा
वेचैन मन बिचारा व्यापी ज्यूं प्रेत बाधा

महमा नद्यांरी मेटी सरताल सब सुखाया
कोप्या अनेक कळजुग छिति पैं कुराज छाया
ग्रीखम प्रताप गहरा अनरुत उपेखणी है
ताकत बिसेसता री दुनियां नैं देखणी है

रुत-रुत रा रूप न्यारा बिध रा विधान बांका
कंह सूर, चन्द सोहै कंह जूथ तारकां का
कंह त्रविध विध समीरां कंह प्रबळ वळ प्रभंजण
कंह मेघ झड़ मनोहर कंह व्योम गोम गंजण

कंह सप्त स्वर सजीला बीणा सितार बाजै
कंह गगन–चुम्ब भवनां, कंह झूंपड्यां उछाजै
कंह पेट पीठ लागै कंह अरुचि ऊदरां का
कंह तोल जोख तनका कंह घोख नूपुरां का

कंह तूटती झळां का नागै सरीर निरखो
प्रस्वेद धूड़ पोता; पूरा संताप परखो
कंह बन्द पाट कांधां, कृत झोंक कूलरां का
वातानुकूल वणिया, घण कक्ष तळघरां का

कंह छांह जांटियां री, निस्संक गहर नींदां
कंह गिलम गादलां पर आख्यां भरी उणींदां
चिन्ता विमुक्त चित्तां, कंह आणन्द कारणां
कंह भीम चिन्त भारां नींदां निवारणः

उतफुल्ल हास अधका कंह रोणां, बिसूरणां
छाई दुकाळ छाया कंह पावस्स पूरणां
कंह कुहु अंधार काळा कंह सरद रा उजाळा
कंह तपै घोर ताता, हिम सीत कंह हिंवाळा

गीत श्री करणीजी रो

माहरी अरज सुणो मेहाई
अवळंब एक आपरो आई
बालक साद सुणो बिरदाळी
काटो घोर कसट मा काळी

जिण दिन आय धरा पर जमियूं
पोख तदिन हूं मा रो पमियूं
पिण्ड जकी पाई पुखताई
सो जननी पय साख सवाई

बोलण-चलण विवेक बडाई
सह मैं मा ! थारी सकळाई
कां जोगो छोरू किनियाणी
धिन्न तनैं धजवंध धिनियाणी

चिन्ता तनैं माहरी चावै
उरड़ विपत कोई नंह आवै
छाई राख सीस कर छाया,
मोटो विरद तूझ महमाया

नत सिर मात चरण-रज चाहूं
गात भगति-जळ में अवगाहूं
कर गह मनैं उठा मां करणी
हिये लगा अब संकट हरणी

वाणी दे अब मो ब्रह्माणी
सारद तू तू ही सिवराणी
कथूं तुहाळा विरद कृपाळी
भव भय सगळा मेट भुजाळी

गढ़ री ओट राख गिरराई
सुत संजुत आयो सरणाई
भीड़ पड्यां तू ही दुख भांजण
गरब रिमां रा आखा गांजण

अतरी राख मया अधकाई
वडां वडेरी तूझ वडाई
बाळक री चूकां बगसाओ
खड़तां सीह दुरद्द खपाओ

जकां मूझ सिर मोहरा जड़िया
पाखा घात पिण्डां पिळ पड़िया
तोक त्रसूळ तिकां सिर तोड़ो
फट कूंभाथळ श्रीफळ फोड़ो

ऊगै सूर उगूणू आखो
राज मनैं सरणागत राखो
पिसण आंथतै दीह प्रमाणूं
जननी हित मो पर जद जाणूं

सूधी अरज सुणो सुरराई
कान-पसाव तुरन्त कराई
अवकै जेज रती नंह आणो
परवाड़ो कळजुग परमाणो

दास त्रास पाळो दाढ्याळी
वाहो विघनां सिर वाढ्याळी
अटळ करो बिसवास अमीणूं
हुवै न मो पख ओरूं हीणूं

हर रो चाकर

एकर मनैं आप अजमाता तो कांई नाजोगो पाता
विन परख्यां कीधी वदनामी सोची भली बात नंह स्वामी

हूं तो घणूं भरोसो हेर्‌यो फेर फेर मन कदे न फेर्‌यो
आप कियां सोची अणहोणी अलख लखी किन आप अजोणी

जुग-जुग री पहचाण पुराणी भूल करी ज्यो आप भुलाणी
चाकर री माफी सह चूकां मालिक किसै भरोसै मूकां

सांचै भाव समरपण सारूं कोताई लवलेस न कारूं
ओज्यूं याद दिवास्यूं अवकै झड़सी वीज एक ही झवकै

ओळखतां सांचा अह णां प्रीत हुवै पागल मन प्राणां
लुळ-लुळ भळे मनैं उर लावो कर गह पतित उधार करावो

वस अव नाथ मती विसराज्यो लोयण कोयण मांय वसाज्यो
जुगती जोग कुजोग न जाणूं एक वीनती अतरी आणूं

परखंता प्रीतम अव पेखो लीज्यो मत कोई ऊंडो लेखो
ठाकर आप रखाज्यो ठरको हर रो चाकर रहसी हरको

वर-याचना

मुगती, विभो, अमरता मंहगी
सुजस धरा सुख सानी
राज-पाट रिद्धी अर सिद्धी
मिळी सकळ मनमानी
तव दीधां पाया जगदम्बा
मन-भाया फळ मीठा
मांगा अै वरदान मानवी
दास न वाल्हा दीठा
हूं गहलो मोटी वुध सारू
मांगूं ओ वर माता
कायर जलमै जिकण धरा में
दीजे वास न दाता
तिरणां रा टूटोड़ा झूंपा
फूटोड़ा घर फावै
वीरां तणूं वास निस वासर
तिकण धरा कर तावै

चरजा

लाज म्हारी अम्बा वेग उबार, करी मैं आतुर आज पुकार
तरणी जद जगडू तणी डटी भंवर विच डाढ
सुणतां वाणिक साद नै करणी दीधी काढ़
भुजा निज दहणी वेग वधार
सेखा नौं जद सिंध में जड़ियो मेछ जरूर
संभळी वण ल्यायी सकत काट्यो कसट करूर
भक्त को मेट्यो दुःख अपार
तैं जोड़ी अणदा तणी निरवळ लाव निवाण
दम्भी वण जगदम्बिका प्रगट वचाया प्राण
जगत में छायो जैजैकार
अबको वेळ्यां ईसरी सुत नै वेग सम्भाळ
तूं आळस करसी ततो होसी कोण हवाल
सरै नंह वीसरियां इण वार
मेहाई संकट समै जपूं तनैं जगदम्ब
वीसहथी थारै विना और नहीं अवलम्ब
पूत रै माता ही आधार

धोखो

एक धोखो आंवखो रहग्यो अली
स्याम जाणै कद सिधाग्या रह गई हूं एकली
जावतां जाणी नहीं वां, राम काणी रंच री
पेखतां हिय कीं न पेखी पळ रियै परपंच री

नैण हूं वस निरखतां ही न्हाल व्हैगी
खोय आपा आपणां कंगाल व्हैगी
वैण फूट्या नीं विचारा कैण री सोची घणी
ऐण वखतां ऊठग्या वै वावळी सी हूं वणी

साध जाणैं कै जुगां री पाळ राखी ही हिये
मोकळी मनुहार वात्यां जाळ राखी ही जिये
सै धरी रहगी समरपण सांधना
एक भी पूगी कठै वे उर तणी आराधना

ओ जलम रैग्यो अधूरो आगलै नैं कूण देख्यो
भाग में रैग्यो भटकणूं पागलै मन कीं न पेख्यो
रई सासां रै भरोसै नित निसासां नांखणी
न्हाळतां आकास कांनी आंखियां छै उणमणी

कठै हेरूं कुण वतावै चीतवा नैं जीव चावै
खोज काढ़ं जे खिती पै वायरो झट वूर जावै
कूण जाणै इण कसक नै पीड़ कोई जो न पावै
आंधियां छायी अंधेरी भीड़ सूं चित नैं भ्रमावै

ध्यान में दिन रात धारूं सांवळी मूरत संवारूं
मूक हो मन मारती सी आरती उर में उतारूं
कलपना री बात कोरी दीठ में आवै न दोरी
अब कठा सूं आवणी है सास कोई एक सोरी

भाव-भीनी नीजर्‌यां सूं पद तणी रज परस पाऊं
हूं सुयम ही भूल बैठूं अर उणां नैं भी भुलाऊं
करम-बन्धण काटवा नैं लो किसी किरमाळ लाऊं
लाज राखो आज प्रभु मैं राज रै सरणै रहाऊं

समरपण

वै दिन तो आख्यां वीच वसो
ग्रै दिन थिर रहणा नहीं कदे
"एकर थे आज्यो आलीजा"
कोई फिर कहणा नहीं कदे

जिण दिन हूं पहली वार लख्या
सपनै रा सौदागर सखरा
उण दिन ही हार गई हिवड़ो
पण भूल गई अपणै पखरा

समपी हिय सूं वण हूं सरला
परला तट हूं इण पार ग्रई
क्यूं कह न सकी चुप रह न सकी
मत जाणै कींकर मार गई

वण आभ तणी विछटी विजळी
कजळी घण कांठळ हूं कड़की
सजळी वण स्याम घटा सरसी
धजळी निज धाम हिये धड़की

वस और ग्रवेर नहीं वसरी
ससरी भल रात ग्रमावसरी
हिव ग्राप करो हिमवन्त हमैं
पिव चिन्त वसन्त न पावस री

विराट्

थम्यूं ग्रकास कियां विण थम्वा
ग्रमां समभ्र नंह घणा अचम्भा
कूण सकत वस पळै प्रकत्ती
कूण खबर ले राई रत्ती

उडगण चांद किणां वस ऊगै
पूरब रवि प.च्छम किम पूगै
घिरणी सीस प्रथम्मी घूमै
चुम्वक सकत कयां कर चूमै

वातां घण विज्ञान विचारै
सोध-सोध कई कारण सारै
जठै-तठै सिद्धान्त जचावै
पण सह वातां समभ्र न पावै

ग्राखर जोव कठा सूं आवै
सेस ग्रायु कर कठै सिधावै
जळ ग्रर ग्रनळ कूण निपजावै
कुण सागर मरजाद रखावै

कुण गिर मेर हिमाचळ कीधा
देखण, सुणण कान चख दीधा
भूख प्यास कुण जीव भळाई
ज्वाळामुख कुण ज्वाळ जळाई

अप्पै आप नहीं कोई अप्पै
तेज प्रताप किणी रै तप्पै
जो सकती जग कारण जाणूं
जिण रै पिंड ब्रहमंड जगाणूं

कतरी गंग अकास कराई
भीड़ नखत्रां जठै भंराई
केता सूरज चन्द्र विकासा
किया तिमिर हर घणा प्रकासा

रूप विराट जका कर राखा
कोटि-कोटि जोजण इक साखा
रोम कूप ब्रहमण्ड रहावै
निपजावै खिण मांह नसावै

खळ-खळ गंगजमन खळकाई
वसुधा सवज बनात विछाई
तर वनचर विध-विध निपजाया
गुण जिण सास्त्र पुराणां गाया

काळ चक्र किण रै कर चालै
कुण खड्रितु क्रम-क्रम हूं पालै
कृत विज्ञान तणां कोई कारा
सुध पामीजै कारण सारा

है कुण जिकण हुकम सब हालै
चख दीखै न वुद्धि परचालै
पण निहचै ही है कोई प्रेरक
टेढा सवद जाळ रो टेरक

परतख जिकण तणूं परमाणो
वोह मुसकिल सिव ब्रह्म वताणो
अनुभव हूंत समझ जे आवै
बिन अनुभव कींकर कह पावै

वोह माया रा जाळ विछाया
जीव अजीव जका निपजाया
अणु परमाणु तिकण हथ उपना
सको जोग निद्रा रा सुपना

खण्ड विखण्डण जिणरा खासा
वेहद कारैं घणा विणासा
ओरस जात जिकण अवतारी
वोह लीला जग में विसतारी

संसय छोड़ सुद्ध मन साधो
उणनैं उर मांही आराधो
करतां मया करम-बंध कटणा
छाया घण माया रा छटणा

भजन

निरखज्यो म्हारी दिस नन्दकिसोर
मैं जुग-जुग रो प्रबळ पातकी
निबळ सदा रो नीच
हेको पुण्य करम नह कीधो
लीधो पाप उळीच
झूंठे मोह प्रपंच झमेलै
रहियो सदा विभोर

निरखज्यो.......

कदे ध्यान सुमरण नंह कीधो
दीधो सदा भाग नैं दोस
ताप न दियो कदे निज तन नैं
मन नैं सकियो नहीं मसोस
स्वारथ रत परमारथ सूनूं
भग्यो फिरूं निस भोर

निरखज्यो.......

अतरा दिन बीत्या ओगण में
गुण रो कदे न राख्यो ग्यान
कुकरम रो आलिंगन कीनो
धरियो हेक बिसै रो ध्यान
ऊमर तणू घणू अंग बीत्यो
अब बचियो कांई और

निरखज्यो ....

दाता री देण

मनैं खुलो आकास मिळियो
मुकत पवन में स्वास मिळियो
पोट-पोट परकास मिळियो
वन्ध रहित बिसवास मिळियो

निपट निरमळ नीर दीधो
तन ढकण नैं चीर दीधो
चंच दीधी अर तृपति हित
चुगण रो सरजाम कीधो

सिर छिपावण नीड़ दीधो
उड़ण हित दो पंख दीधा
देखणै हित चख दिया दो
कान नासा स्रवण कीधा

अकल सोचण हित अनोखी
मन विमोचण मूढता
मान राखण ध्यान मांहीं
ज्ञान राखण गूढता

वचन बोलण चरण चालण
प्राण पाळण प्राण धण
सीत-गरमी-मेह-आंधी
स्याम कांठळ घण सघण

विरछ वेलां सरित सरवर
मेर गिरवर मोकळा
दस दिसां अर रात दीहां
मोह सपना मोकळा

चांद सूरज किरण कौतुक
तार-भार अपार तक
रंग पपीहां मनां-रंजण
कोयलां वाळी कुहक

रात हित विसराम राखी
दीह करतव दोड़णा
नीत सखरी भाग नाका
महनतां कर मोड़णां

दरस विध-विध रा विलोकण
परस अनुभव पूत
स्वाद मीठा मधु सरीसा
चारु फळ-नृप चूत

वन्द मूळां वीच विखरी
मन्द फूलां री महक
मन-लुभावण गीत मीठा
गाण ताणी सुर गहक

भाव भरियो हियो भावुक
सुधि भर्‌या सन्देस
जगत मांहीं मिनख जोणी
वात वात विशेप

निरख कतरी न्यामतां नित
लाह जीवण लेण
गुण कता उपकार गिणणा
दुळभ दाता देण

सती-महिमा

महळी हूं तद मानस्यूं प्रीत तणी परतीत
लागूं जे अरि लोहड़ां राखीजे कुळ रीत

धव पड़तां हिव धारिजै बिनय भर्या मम बैण
सीस उपर रह सावता निरखण पण धण नैण

नीला ! भूलीजै नहीं संग लियावण सीस
राखूं झळ गादी रमण आखूं वण आसीस

सासू गोदी सांमियूं सैसव मांय सुतन्न
हूं गोदी पिव सीस ,झल प्रवसूं झळां प्रसन्न

सासू हूं सरमावती पड़वै जातां पाण
गोद पीव झाल्यां गरब पैसं अगन प्रमाण

पेख्यो नख न पडोसणी देख्यो चख न दिनेस
सको अगन मंह पेसतां दरसण कीधो देस

भाभी मोनूं भावणी कुळ-खेती इण कज्ज
धारां लागै जे घणी अगन प्रवेसूं अज्ज

आजे घणी उतावळी दिवराणीं किण दाय
ऊभी वळवा अंजसै सोकण नथी सुहाय

देवर कटतां देखिया हाव भरन्ती हूर
पण दिवराणी आग पड़ पूग गई सँपूर

बरमाळा रहगी वणी किरमाळां रण खेत
सतवाळा आया सुभट परियां हुई पछेत

बांप बाप बिरदावणा बोलै दुनियां बैण
हरखै बिहुं पख निज हिये निरखै राता नैण

सखी अमीणै पीव रो अहो काम अनूप
वाहन्तां खग वाहरो रिमां सराह्यो रूप

सखी अमीणै पीव री बांकी खाग बिलोक
मापै आकासां मुदै आपै देख त्रलोक

सखी अमीणै कंथ री सत्रां रै मन संक
ऊमाहै विढ़ अेकलो वाहै खग रणबंक

धड़ सिर रहियो धारियां, लोहां अरियां लग्ग
खग झटकतां आगझड़ बहुरि न हुवो विलग्ग

लीलो रपटण लागियो परस रुहिर अरि पंक
कुट पड़तां पिव काळजो, काढण ढूका कंक

पमंग धणूं पण पाळियो अरि सेना दळ अग्ग
धड़ सिर प्रीतम धारियां मुड़ियो घर रै मग्ग

बध आगी बाधावियो नीराजणै नजीक
मूंछां भूं मिळती लखी आंख लखी अणभीक

जीव थकां चाही जकी निरवाही घण नीक
अब हूं अगन सनान कर जाहूं पीव नजीक

रवि निज रथ नैं रोकियो पण धण पेखण काज
दमयन्ती, सीता दुहूं लख चख भरगी लाज

सीता अगन परस्स कर दिब्ब परिच्छा दीध
राख अठै रवताणियां कुसुम जिसा वप कीध

अगन हुई खुद ऊजळी झळां बिम्मळां जाण
सती जाळवी इण सळां सोळा कळा समाण

देवां हरस्या देखतां बरस्या फूल बिमाण
मिनखां जुग जुग मानणी आं सतियां री आण

जिकण धरा अै जामणी धरा तिकण नैं धन्न
तन फूलां कंवळा तिकां मंह फोलादां मन्न

जठै सत्यां जळमी हुवै दीसै बियो न देस
कीरत राजसथान की सकै कूण कर सेस

नरां हूंत बध नारियां आगै रहवी अेथ
श्रवणां हूं किण सांभळी कोह जस कीरत केथ

वसुधा पर कतरी वसै जात और उपजात
खत्रवट नैं खत्राणियां प्रत कुण सुमरै प्रात

नरां बिलूंबण नारियां, तरां बिलूंबण बेल
झळां विलूंबण बे झिझक खरो मोत रो खेल

आग बळन्तां नंह अठै 'सिसकारो निसरन्त
इण जोधारां ईखियां विध भी सुध विसरन्त

जण जण बिपदा जोखतां जोहै जीव जतन्न
पण अगनी मंह पोखतां तोख इणां रै तन्न

तन सिणगारै सब तियां पिया मिलण रै चाव
अै सिणगारै आपनैं पैसण आग पसाव

सह न सकै कोई दुसंह ताती झळियां तप्प
तन फूलै ज्यूं कलपतरु बळतां इण रै बप्प

केस बळै केसर फळै मांस बळै मज्जाह
कीन विसन भी कळमळै सेस तणी सज्जाह

आतमबळ मन बळ इसा आभ समाणा ऊंच
दुनी बिया कोई देस कद पावा इण नैं पूंच

बळदाणा इण हूं वडा सक्या न कोई सोच
सकळ जगत री सभ्यता पड़ी इणां हूं पोच

संज्ञा आतमघात री जिण दीधी अणजाण
बोह ऊंचा बळदाण रा मेट्या सगळा माण

आगै सुणी न आज दिन घात किणी अपघात
पामी मुकती पातकां प्रत सुमरण कर प्रात

साका बांका साधिया सहसां तणा समूह
हीमत रा अै होसला, दीसै वणा दुरूह

जांरा मांटी जूझणा सिर कटियां समसेर
तांरा झळ लागण तुरत दम भर सहै न देर

कण कण कर कट जावणू मौत सीस नर मण्ड
तन दाझै सतियां तणा घर घर घणा घमण्ड

रण कटतां राख्या नहीं कूटनीति रा काम
पीधा उण बीरां प्रगट जहर तणा सौ जाम

पतियां मरता पेखियां जौहर सतियां जोग
जे राखा विस-कण्ठ ज्यूं आखा गरळ अरोग

जोग सती हुय, जावणू फेरा लीधां फेर
पति फेरां पहली पड़ै, बळतां करै न बेर

कंवरी लखियो कन्थ नैं चंवरी चढ घण चाव
तद भंवरी चढियो तुरत मरण कोड अणमाव

पाबू रण-थळ पोढियो वचन निभावण बीर
सोढी लग झळ सांपरत नैण सुखायो नीर

तज हथळेवो चढ़ तुरी रण कटियो राठोड़
सोढी पोढी आग सिर मह सतियां सिर मोड़

वड़ी वड़ी बप बाळतां हुवै सत्त री हद्द
जुगां सहस सधता जका बधता घणा बिरद्द

वीरा-रस रा बैसणा औ आतम अभिमान
कोड़ जुगां छळवा करै, बळबा रा विज्ञान

दुरजण–लक्षण

सोरठा

दुरजण तणै दिमाग सदा बुराई सांचरै
काळो जिसड़ो काग तिसड़ोइ मन राखै तिको

दुरजण रा गुण दोय ओगण भर्‌यां अनेक ही
कृत्त न मानै कोय कुकृत तजै न एक भी

बोलै मीठा बोल खोल खोल मन खांखळै
घट भीतर बिख घोळ भरियो राखै उमर भर

अपणा ही गुण आप गावै निस दिन ओगणां
तन नंह लागै ताप ज्यांरै आतमजोख री

कुल फीटा पामर फकत धीठा नीच धमीण
मन चीठा ज्यां माणसां कायर कूर कमीण

ज्यांरै लालच जीवणू रात दिवस इक रंग
पैलां रो हित पेखतां आतस लागै अंग

कुळ द्रोही मन में कपट भर्‌यो झूठ अभिमान
गुण नंह समझै औगणां भोजन सुभट भयान

कुळ गामी नामी कुता नमक हरामी नीच
अति कामी क्रोधी अधिक बदनामी रा बीच

ज्यांरा कुकृत जोहियां लरजै धरती लाज
सरजै बिधना भूल सूं तिरछोलां सिरताज

कुकृत जेता कर सकै तेता करै तमाम
क्यूं न रहै जग में कहो बांरा अमर कुनाम

जोर जुलम करतां जकां लाज न आवै लेस
कर साखी राखै कता, नित प्रत नया कळेस

जे न कदे मन जाणिया भलपण वाळा भाव
भरिया राखै उमर भर दिल में घणा दुराव

दूजां रो सुख देखतां मन दुख मानै मोट
निज सुख ताणी नीच नर चट कर बैठे चोट

गडका कर कर ओगणा बोलै बडका बोल
मोको आयां खिण मंहीं तुरत नीसरै तोल

विण कारण ही बेझिझक गिण गिण काढै गाळ
जोड़ै सज्जन जतन सूं तोड़ै तीजी ताळ

बदमासी नस नस वसी कसा कमर वद काज
आ बीमारी छै असी ईंरा जूत इलाज

अपकीरत प्यारी इणां खारी कीरत खास
कुट बातां सोचै कथै बाणी बुद्धि बिलास

नैण-पचीसी

दो नैणां वाळी दुनी चिरताळी घण चीत
लुळ सणां मन लागणी रिमां दागणी रीत

दीठ नेह वाळी दुगण जींवण पीछ जगार
राखै विलम्यां रात दिन हिवड़ा हार हजार

चितै जिकण दिस चाव सूं तितै अतन उतपात
जितै भुवन दस च्यार ज्यो कितै पळक मुळकात

दाफै दोयण देखतां छाजै सजन छकाय
गाजै घण दामण गुमर लाजै प्रीत लगाय

लाज सनेह मिलावियां जिका अधक जीवन्त
सावणियां बरसै सहस सरसै लाख बसन्त

चारु सरद री चांदणी जे मदहास जळद्द
मद प्याला भूलै मदप हाला तणा हवद्द

ऊंडाई ज्यांरी अधक झील जियां मन झाल
पोयण कोरां पाळवै लोयण डोरां लाल

लांबै डोरां लावियो काजळियो किण कज्ज
वीभळियां मन वाळवा अळियां मोहण अज्ज

पलकां झुकणू पेखतां ललकां मन ललचार
तलकां लागै ताछणा अलकां रै आधार

तीर मकरधज रा तणै हुवै कळेजां हाक
त्रिभुवण वस करले तुरत तिरछी निजऱ्यां ताक

वणियोड़ी भ्रू, बांकण्यां तणियोड़ी तेगांह
कर कटाछ झट काटणी अन्तर आवेगांह

मन राता माता महा जकां चिताता जाण
भर पाता प्याला भलां ताता मद किण ताण

निजऱ्यां मद पीता नहीं जीता नहीं जरूर
मर मिटता कतरा मिनख कर कर करम करूर

और सकळ अंगां अधक, आंख्यां रा गुण ईख
तोल कियां मांगै तुरत सुधा सुरा सब सीख

दुनी मांय दीसै बिहद औ दुख रा दुय ऐण
मेह बिहूणा बादळा नेह बिहूणा नैण

नैणां जिण बसियो नहीं रंग रसियो दिन रात
वै नेतर बिण अरथ रा बांरी कैड़ी बात

हेरन्तां हर हेरिया भुवण मोहणी भाळ
कुलफां जड़ राळै कता जुलफां रा जंजाळ

ऊधो नंह समझी अती सूधो देय संदेस
सगुण गोपियां रै बस्यो अगुण कस्यो उपदेस

ज्यांरै नैणां जागती प्रगट कान्ह री प्रीत
की निरगुण वाळी कथा करती विथा वितीत

वाणी नैण विहीण है आ समझण आवैह
पण वाणी नैणां प्रतख सैणां सरसावैह

सोरठा

नैणां विण वाणीह जग सह जाणी इण जुगत
तकतां किण ताणीह आसकतां होवै अधक

दूहा

जिकी अचारज जाणवी तिकी ओपमा तीन
संकै दृग देख्यां सरब, मृग खंजन अर मीन

पिण इण नैं ली पिडतां मदिर ईखणी मान
थिर सोई नैणां थकै जोई सुरा जहान

कंवळ जिसा लोयण कथी नथी हुवैला न्याव
गुण इण मांहीं गंध रो (पण) वांरा घणा वणाव

चंचरीक वंधण चितै मुकळित कंवळ मुकत्त
लखतां बिकसित लोयणां रहै हियां अनुरत्त

सोरठा "रूपजी" रा

निरखै नैण निरीह पास खड़्यो बूढापणो
दीसण लाग्या दीह रंग बिहूणा रूपजी

तो मन में तोलोह राजां (ई) छोड़्या राज नैं
हर गंगा बोलोह रपट पड़्यां सूं रूपजी

चंचळ ज्यांरा चीत ज्यूं घण मांझळ बीजली
मतलब वाळा मीत राखै प्रीत न रूपजी

निरखो जग रो नेम भरिया नैं सारा भरै
कोपै विध भी केम रीता ऊपर रूपजी

दिन उगतो दीसैह आंथणवा ताणी अवस
खिण खिण कर खीसैह रुकवै काळ न रूपजी

भरमैं चित उदभ्रान्त सरै न पळ सन्तोष रो
सुखी न होवै श्वान्त रिजक तणूं कांई रूपजी

चालै कोड़ी चाल सौ जोजन जाले सहज
पण बैठो खगपाल रंच न हालै रूपजी

झिममिल तारा झाड़ ऊगूणी रवि ऊगियो
पोयण खटपद फाड़ रिसकर उडियो रूपजी

औरूं कर अनुराग मन्द मन्द गुंजत मधुप
पंकज हेत पराग रह्यो कैद व्है रूपजी

अग जग री आखीह माया ममता मोहणी
कुण बस कर राखीह रंग अभिलाखी रूपजी

दिल आदर दूणूंह ऊणूं हुयसी आप ही
आखिर अणहूणूंह रहै कुकारज रूपजी

पूरब भव पोणूंह जोणूं पड़सी जीव नै
होणूं सो होणूंह (पण) रोणूं रहसी रूपजी

मिळै पुराणा मीत आवै याद अतीत री
बै दिन गया स बीत रीत किसी आ रूपजी

जग सूं तज'र जुहार मद पी पड़िया मांय नै
मोत तणी मनवार रहै न चोखी रूपजी

आवैलो दिन एक पछतावैलो पाप पर
ओ मनड़ो अविवेक रीरावैलो रूपजी

गुण तज औगुण गैल पड़ जाणूं कांई पछै
मन रो आखिर मैल रै! कद कटसी रूपजी

जोबण रह्यो जतैह करी जकी कोई कर सक्या
मिटती पीछ मतैह राखी कींकर रूपजी

दारू रो रंग देख मारूजी रीझ्या मतै
लख्यो न खोटो लेख राम तणी गत रूपजी

मन में आवै मीत जीत सकूं तो मन जको
गाऊं इसड़ा गीत रीझ पड़ै तूं रूपजी

चिकट घड़ा ज्यूं चेप बारि बुन्द जग नंह वणै
नहीं रहै निरलेप रै! दारू सूं रूपजी

भव रा आछा भोग लोग तजै जिणरै लग्यां
रुळ दारू रो रोग राखो अळघो रूपजी

सिर पर चढ़ै सवेग गळै उतरतां ही जको
इसो खणिक आवेग रहै न कायम रूपजी

सूझै जिसड़ो सांच जो हो हरदम जगत नै
कीं आंख्यां रै कांच, रंग्यो लगाओ रूपजी

सुक्ख बडो सन्तोस ज्यो दारू जाणै नहीं
मद पी हुय मदहोस रै कांई ढूंढे रूपजी

कर में लेय कुठार पाछै कपड़ां रै पड़्यो
आंख्या देख उठार रहै क कटसी रूपजी

ऊमर ओछाणीह पाणी ऊतरतां पगां
ज्यो तूं कद जाणीह रे ! समझै किन रूपजी

हळ खड़ियो कर हेत बा जोतर कीधो बड़ो
खावै चिड़ियाँ खेत राखै चेत न रूपजी

मंद पी मनमानीह करतां नंह संकै कियां
कर दृग घर कानीह रै ! अभिमानी रूपजी

तूं दारू ताणीह मरणूं क्यूं मांड्यो मरद
पी चरको पाणीह रोग न घटणूं रूपजी

दिलवाळी दुनियांह सूनी ही दोठै सही
कांई फिकर कियांह रती न बदळै रूपजी

देखो दिल रो दाह मेट्यां प्रभु रै ही मिटै
उर आणन्द उछाह राखीजै नित रूपजी

जो घुटतो जाणेह भाग'र मद प्याला भरै
अधको दुख आणेह रोज इसी विध रूपजी

मन घबरातां मीत ध्यान हरी रो जे धरै
चंचळ थारो चीत रुकै घड़ीयक रूपजी

ओ मन मूरख आप निचल्यो पळ भर नंह रहै
प्रभु रो वड़ो प्रताप राखै बिलम्यो रूपजी

मद सूं मुख मोड़ोह जोड़ो रुख हरि सूं जका
छळ बळ नै छोड़ोह राम भरोसै रूपजी

वाळो तड़फड़वोह समपो दया समन्द नें
लहरां सूं लड़वोह रहै न बसको रूपजी

आगै तिरया अनेक सत तज सोया सिन्धु पर
वाथ्यां पड़ अविवेक रुळ्या कता नर रूपजी

कई जाणै किण भांत करुणानिध करुणा करै
तूट न जावै तांत राजी हुयतां रूपजी

उण रै ही अधिकार जीवण धण दीधो जिका
वाढ'र अधिक विकार रङ्क न होणूं रूपजी

आद जिकण रो अन्त मन में निहचै मानजे
वरसाळो'र वसन्त रयो सदा कद रूपजी

वीसरगी वै वात नीसरगी सुख री निसा
ग्रीखम रो लू गात रई झुळसती रूपजी

अणहूंतो अनुराग कारण विन कासूं करै
नर मिण वाळो नाग रहै भटकतो रूपजी

चरती छाड़र चाल जो ऊधम उपजे जणां
गोखुर सीगा घाल राख उछाळै रूपजी

वंधियो ज्यो वण वाट ताखड़ियां तुलसी सुतह
घिस घिस होसी घाट रुळतो पाथर रूपजी

है मालिक रै हाथ हाण लाभ वाळो हिरा
सदा समै रै साथ रहणूं आछो रूपजी

काया मोटरकार पहियो बस राखजो रूपजी
रूकै न जे रफतार रह टकराग रूपजी

भरियो जग सुख भोग कर कुजोग भटकै कता
लाभै बुधवर लोग रहणी करणी रूपजी

जीणी जतै जरूर सुध हीणी गत सांपरत
भीणी काया भूर रहसी मीणी रूपजी

तन मन जन्तर तार खिंचै जतायक खिच सकै
भुकै न दे भणकार रै ! घण खींच्यां रूपजी

मेट'र कुळ मरजाद व्याकुळ हुय रहणूं बिहद
अतरो मन अवसाद राखीजै नंह रूपजी

बणै बीगड़ी बात नीत भली राख्यां निपट
भळे हुवै परभात रात बीतियां रूपजी

अधकी ज्यांरै आग मदकी सिलगै मोकळी
भूंडा त्यांरा भाग, रुळै न कींकर रूपजी

ओरां सूं अनुराग अपणां सूं विख ओळखै
इसडां रै सिर आग राखो बळती रूपजी

आखर कतो अंधार होणूं जग मांही हमैं
चोखो कपटाचार रियो पनप क्यूं रूपजी

दुख वाळा दिन दोय हिये गोय राखो हरख
काढ न पावै कोय रोयां धोयां रूपजी

चोवारा चोरांह भुकवाया देखो भटक
इण जुग में ओरांह रुकी कमाई रूपजी

हरदम होडां होड मिनख बडाई मांगवै
करै न जाभा कोड रचवा करतब रूपजी

किण रो भाग किसोह जोयो क़िणियन जगत में
जिण रो करम जिसोह रहियो नेम न रूपजी

पथ कांटां पूरोह जोय जोय पग धारिजै
साम्रथ कुण सूरोह रहै नचीतो रूपजी

इण जग मांही एक सांप्रत जिण साध्यां सरै
आखर साध अनेक रहै न बाल्ही रूपजी

जिण मन जीतवियांह पायो त्रिभुवण रो सुफळ
चंचळ चीतवियोह रियो विफल व्है रूपजी

कंचन मृग रै काज सीता दुख झेल्या सकळ
लोभ तणूं न इलाज रखै धनन्तर रूपजी

आ दुनियां आखीह निज पाखी राखै निजर
सो कुण जग साखीह राखी पर हित रूपजी

बाळापणो विसेस जग मांहीं प्यारो जको
ससि दुतिया रो सेस राखै शिव सिर रूपजी

जाग सकै तो जाग निरभै मत सो नींद में
आ जंगळ री आग रुकणी कदे न रूपजी

जिण घर में जलम्यूंह उण रा अधकाचार हा
पण मद रै पिलम्यूंह रहै कयां तूं रूपजी

जीवण में जाणैंह किसा किसा दुख काटणा
तू क्यूं मन ताणैह, राख ठिकाणै रूपजी

समझै ओगण सार बार बार नटतां बिहद
गुण नैं तजै गंवार, रासो ओ कांई रूपजी

मन विणजारो मीत प्रीत तणें वस नंह प्रतख
गावै किणरा गीत रोवै किणनैं रूपजी

पाळै सकळ प्रतीप मगर भेक झख मोकळा
सागर पाखै सीप राखै मोती रूपजी

पुळ पुळ कर पुळकांह मुळकां सोभीजै सुमुख
रंग दारू रळकांह रहै विलूंम्यो रूपजी

तन में रह्यो न तेह मन में अंजस मोकळो
निसफळ मद सूं नेह राख्यो कींकर रूपजी

छिण में लाधै छेह कोड़-भांत गोपन करो
नैणां वाळो नेह रहै न छानूं रूपजी

पलकां पाळजियोह ललकां मन लागी रहै
कसकां काळजियोह रहसी काढ्यां रूपजी

रसणा नैं बस राख कथै न जे कूड़ा कथन
सापुरखां री साख रहै सदामद रूपजी

अन्धां रा सुत अन्ध द्रुपद सुता कहिया ज दिन
साड़ी खींचण सन्ध रुप्यो वीज तद रूपजी

मेटै नंह मरजाद दुख भांजण वसुदेवरो
उण नैं कीधां याद रहसी आयो रूपजी

करम तणो अधिकार फळ इच्छा छोड़ो परी
करै भली करतार राखो निहचो रूपजी

चित अनन्य चेताह जे उपास प्रभु नै जपै
जोग खेम जेताह राजै तेता रूपजी

ज्यो उण नैं जम्पैह हिये पयम्पै तिण हरी
कदे न मन कम्पैह रम्पै निस दिन रूपजी

जो हिवड़ो जुड़ियोह सागै वहन सुभद्रा
अरजन ले उड़ियोह रजा किसन री रूपजी

मन जिण सूं मिळियोह तन रो कोय न तालुको
छक मोहां छिळियोह रहै विछोहां रूपजी

साचा मन साथेह टेर सुणन्तां टिटहरी
हरि अपणे हाथेह राळी गजघंट रूपजी

खींच खींच पट खूब दुःसासण भुज दूखिया
डब डब आंसू डूब रोयी द्रोपद रूपजी

नामी जादवनाथ कैरव कण्टक काटिया
भेळाई भाराथ रिया नसट हुय रूपजी

सोना मांय सुनार कपट खोट घाले कता
सुख खातर संसार रचै घणां ढंग रूपजी

तन सकळाई तंग मन ऊंचाई मोकळी
ढ़ळती रा अै ढंग रहै न आछा रूपजी

अपणै ही मुख आप मीठू वण वैठै मियां
तिकां न पश्चाताप रहै कदे भी रूपजी

ओही गढ आमेर वढ चढ जयगढ़ वाजनो
फकत दिनां रा फेर रद कर राळ्यो रूपजी

ज्यूं ग्रीखम में जेठ तपै सुरज घण तावड़ै
निरवाळा गुण नेठ रुचै ठेठ सूं रूपजी

सौ हिकमत साथैह बाथै कींकर वायरो
मानो सिर माथैह रजा सजा प्रभु रूपजी

मोटो ज्ञान महान सार कथ्यां हो सांपजै
विघ पूछै विदबान रीत निभावण रूपजो

गीता रो गुर ग्यान कायरता अरजन कटी
भण्यो किसन भगवान रथ हांकन्तां रूपजी

इसड़ो कोण उपाव तिरस ह्वै आतम तृपत
घायल मन रो घाव रिस रिम दूखै रूपजी

तनवाळा सह ताप ओखध लीधां ऊतरै
मन रा दुख अणमाप राम मिटासी रूपजी

है मालिक रै हाथ सुख दुख दोन्यूं ही सहज
समै हवा रै साथ रहो बहन्ता रूपजी

अघ रा पन्थ अनेक पुण्य तणो है एक पथ
सोधो तिण सविवेक रोधो मनगत रूपजी

सज्जण जण सहसीह दुरजण रा वच दूखता
कीरत जग कहसीह रहसी कसर न रूपजी

समझै करतव सार ज्यो न कदे निज जाण में
उणरा किम अधिकार रहै जगत में रूपजी

चित में ज्यो चहणीह वहणी कर वाणी विसै
की ज्यादा कहणीह रहणी वातां रूपजी

नोट :--

सुरगवासी श्री रूपसिंह जी हापावत कोट निवासी म्हारा घणा नेड़ा मित्र हा। दोनूं साईना दाईना अर इकसार विचारां वाला हूंण रै कारण आपसरी रै मांय एक दूजै नैं रोज रा एकर मिलणो एक तरह सू नित्तनेम रै माफक हो। अैड़ो कोई दिन नीं जावतो जकै दिन दोनुवां रो मिलण नीं होवतो। रूपजी घणा रंगीला अर सहृदय मिनख हा। काव्य अर संगीत में घणी रुचि ही। सितार घणी वाल्ही बजावता। जवानी री आ प्रीत समै रै सागै ढीली पड़ी अर रूपजी रो दारू कानी रूझान घणो वधग्यो। अठा ताणी क दिन रात ही पीवण रो क्रम राखता। मिलणै मिलावणै सू भी वचण रो जतन करता। घणो दारू पीवण सूं अन्त रै दाय लीवर खराव हुयग्यो अर असमय (अधेड़ अवस्था में) ही इहलीला समापत कीधी। आं सोरठां मांय हूं आधा ना उणां रा जीवणकाल में ही रचिया नै उणां नैं सुणाविया भी पण नगार खानै में तूती री आवाज कुण सुणैं। समै, समै पर नया सोरठा वणिया अर ओ सतक पूरो कियो जको निजर कीधो।

विविध

घण नकतोड़ां धातिया, वहिया हुय वेबस्स
वोझा लीधां वेतरह कीधां कस्समकस्स
घाल्यो नायक घंटळो सदा मोर गळ सोच
वधकी वधिया ही बहुत इणरो घणूं अळोच
वधती आतम वेदना दिन दिन दुखड़ा दूण
लद जाणें हित लागिया, हमे तकाजा हूण
नटता दीसै नेठ में अटता निज आपाण
कटता दीसैं सह करम हटता दीसै हाण
साईनां दीठां सह्यो बह्यो बिरह बिख बैण
हिये हगामग होय है नेह जगामग नैण
बिरह कता दिन वाळिया नैण न्हाळिंया नेठ
आतम घणा उकाळिया जबर जाळिया जेठ
कता अडीकां काटिया हिये डाटिया हेत
पेम कळेजां पाटिया न को फाटिया नेत
पीछ मिटै नंह एक पळ तिरस घटं नंह तोय
हरजाणूं कोय न हुवै मरजाणूं अब मोय
घन घुमड़ायो जाणियां फट सी गागर फोड़
दूर वटोही दीसतां देहळी चढगी दौड़
नेड़ै हूंत निहारियां अत अणखाई आंख
मरकत मणि दीसी मनों प्रकट कीर री पांख
मरणूं साफळ मानजे जद मो· सखां जुलन्त
मांटी प्याला मद भरै करे अधर ढिग कन्त
लाखपसावां पाळता नासत हुआ नरिन्द
किण दिस तो कविता गई किण दिस गया कविन्द
सनवन्धी सव सोक में चौक हुवै "चल-चल्ल"
ऊमर वीतां आपणी गीतां रहणी गल्ल

गीत

अवनी पर पड़ती आँतड़ियां अड़ती कूंत अणी आकास
अस टापां धरती ऊधड़ती लड़ती ऊठ मुवां री लास
धारां सिर पड़ती जोधारां सारां लड़भड़ती चिणगार
चख देख्यां ज्वाळा उर चड़ती आस उमड़ती मरण अपार
धरती जदिन मतै धणियां रै रहती तावै ओ ! रजपूत
पी-पी रुधिर वीर पुरखां रो मद छक खूब हुती मजबूत
आजे किम डाटे अधपतियां सिर साटै की पूंजी शेष
खून दिवै सो हिज धर खाटै लाटै ज्यो डरपै नह लेस